।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 अक्टूबर 2025 | वर्ष 18 अंक 07

कुल पृष्ठ - 34 | वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

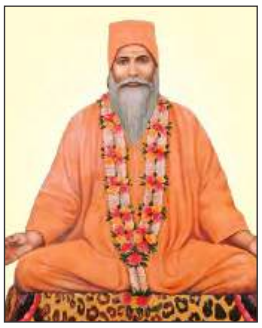

कवि शिरोमणि श्री सुन्दरदास जी के पदों का प्रमाण देते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि श्री सुन्दरदास जी कहते हैं कि कुछ लोग यह कहते हैं कि वह ब्रह्म नाभि कमल में रहता है। कुछ लोग कहते हैं कि भगवान सबके हृदय में विराजता है। कुछ लोग यह कहते हैं कि भगवान कण्ठ में बैठ कर बोलता है। कुछ लोग यह कहते हैं कि प्रभु नासिका के अग्र भाग में रहता है। कुछ लोग यह कहते हैं कि भगवान का निवास भृकुटि में है। कुछ लोग कहते हैं कि भगवान का निवास दशम द्वार में है। कुछ लोग यह कहते हैं कि भगवान का निवास भँवर गुफा में है। श्री सुन्दरदास जी निर्णय देते हुए कहते हैं कि जैसे आकाश व्यापक हो रहा है वैसे ही ब्रह्म भी सब में व्यापक हो रहा है। उस व्यापक ब्रह्म का साक्षात् दर्शन किस प्रकार होगा? यह दूसरा प्रश्न है। समाधान यह है कि सद्गुरु द्वारा बताए गये विधिपूर्वक नाम का अभ्यास करने से अन्तःकरण उज्जवल होता है। उस निर्मल बुद्धि में ही जिज्ञासु को अनुभव द्वारा साक्षात् दर्शन होता है। गुरु महाराज जी के युक्तियुक्त वचन सुन कर महाराज जयरामदास जी बहुत प्रसन्न हुए। इस ज्ञान-चर्चा के बाद गुरु महाराज जी सब के साथ वापस लौट आये।

रात का सत्संग आरम्भ होते समय मुखी बहरूराम जी गुरु महाराज जी को कहने लगे कि हे भगवन्! हमारे गाँव के कुछ लड़के यथा बसन्त, प्रेमानन्द, मुरलीधर, गणेशानन्द, सन्तदास, गोइन्दराम, ये सब लड़के प्रतिदिन रात को दरबार में कथा समाप्ति के बाद भजन गाते हैं, सो अगर आपकी आज्ञा हो तो अभी ये लड़के दो-तीन भजन बोलें। आज्ञा पाकर सब लड़कों ने आधे घण्टे तक भजन बोले। फिर स्वामी ग्वाललाल, सर्वानन्द और गुरुमुखदास जी ने सत्संग में इतना तो आनन्द भर दिया जो सारी सभा आनन्द विभोर होकर झूमने लगी। फिर गुरु महाराज जी सत् उपदेश के विषय पर बोलते हुए कहने लगे कि-

दोहा- **निद्रा भोजन भोग भय, ये पशु पुरुष समान।**
नरन ज्ञान निज अधिकता, ज्ञान बिना पशु जान ।।

आशय बतलाते व समझाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि खाना, पीना, नींद करना, भय करना, बाल-बच्चे पैदा करना ये चारों स्वभाव पशु और मनुष्यों के एक से होते हैं। इतना होने पर भी जिस मनुष्य को आत्मज्ञान और सत् असत् का विचार है तो वह उत्तम है, वरना पशु के समान है। परन्तु विशेष कर तो यह दिखलाई

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

पड़ रहा है कि बहुत से मनुष्यों से फिर भी पशु बहुत कुछ अच्छे हैं, यथा-

पद- **पशू मरे बहु काज संवारे मनुष मरे किस काम न आवे।**

कवित्त- **हाथिनि के दान्तों से खिलौना बने भान्ति-भान्ति,**
शेरनि की खाल शिव तपी मुनि भायी है।
मृगनि की खाल को तो ओढ़त है जोगी जती,
बकरी की खाल से तो पानी भर लाइये ।।
सांभर की खाल को तो बाँधत सिपाही लोक,
गेंडनि की खाल राजा-रानी को सुहाई है।
कहे कवि दयाराम राम के भजन बिन,
मनुष की खाल किस काम नहिं आयी है ।।

उपर्युक्त पदों का अर्थ बतलाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि हाथियों की जो हड्डियाँ होती हैं, उनमें से दाँतों की हड्डियों से चूड़ियाँ और नाना प्रकार के खिलौने बनाए जाते हैं। शेरों की जो खाल होती है वह भगवान शिव शंकर और ऋषि-मुनियों के मन को बहुत पसन्द आती है। मृगों की खाल को योगी लोग व विरक्त लोग ओढ़ा करते हैं। बकरी की खाल पानी भर लाने के काम आया करती है। सांभर एक पशु होता है जिसकी खाल को सैनिक लोग काम में लाते हैं। गेंडा भी एक पशु होता है जिसकी खाल से वस्त्र बनते हैं जिन्हें राजे, महाराजे, रानियाँ तथा धनी व सत्ताधारी लोग पहना करते हैं। कवि शिरोमणी श्री दयाराम जी कहते हैं कि मनुष्य की देह जीते जी तो काम में नहीं आती परन्तु मरने के बाद भी किसी काम की नहीं रहती। राम के भजन बिन मनुष्य की देह की कोई कीमत नहीं है।

उपर्युक्त पदों का अर्थ सुना कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि राम का भजन करने से मनुष्य में परम उदारता व परोपकार के गुण अनायास ही आ जाते हैं। इसलिये भजन कर परम उदारी होना चाहिये। उदारी उसे कहते हैं जो धन, आदि पदार्थों में से स्वयं भी सुख ले और दूसरों को भी सुखी बनाये। परम उदारी उसे कहते हैं जो स्वयं अपने आपको कष्ट पहुँचा कर भी दूसरों को सुखी बनाये इस विषय पर दृष्टांतों के साथ भजन बोल कर राम-नाम की धुनि लगा कर गुरु महाराज जी ने सत्संग समाप्त किया। सत्संग समाप्त होते ही होथिनि गाँव की पंचायत की ओर से भेजा गया भाई ताराचन्द हाथ जोड़ कर कहने लगा कि हमारे गाँव में पधार कर हमारे गाँव को भी पवित्र कीजिये। यह सुन कर व बहुत अच्छा कह कर फिर सब के साथ गुरु महाराज जी भोजन पाकर आरामी हुए।

इस तरह नियमानुसार प्रातः एवं सायं दोनों समय सत्संग का कार्यक्रम चलता रहता था। दिन-प्रतिदिन गाँव के लोगों के प्रेम में भी वृद्धि होने लगी। महाराज जयरामदास व उसकी बहिन जमना बाई दोनों प्रतिदिन गुरु महाराज जी के लिये माखन-रोटी व छाछ लाया करते थे। गुरु महाराज जी भी सप्रेम अंगीकार करते थे और दूसरों को भी बाँट कर देते थे। वहाँ पर बहुत से सज्जन तथा महाराज जयरामदास, माता जमनाबाई, सपरिवार भाई गोविन्दराम, भाई सोमनराम, सपरिवार भाई हुरियाराम, भाई तोताराम तथा और भी कई प्रेमी सज्जन गुरु महाराज जी के शिष्य बने। गाँव वालों का अति प्रेम देख कर गुरु महाराज जी आठ-नौ दिन वहाँ रहे। एक दिन प्रातः सवेरे गुरु महाराज जी जंगल में घूमने जा रहे थे तो उन्होंने देखा कि दरबार के पास में ही एक निर्धन माई चक्की पीस रही है, यह देख कर गुरु महाराज जी के मन में दया आ गयी और उसे पाँच रुपये देकर जंगल को चले गये। थोड़ी देर वहाँ पर घूम-फिरकर वापस आ गये। फिर रात का सत्संग समाप्त कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि कल हम होथिनि गाँव को जायेंगे। यह सुन कर वहाँ पर बैठे हुए भिरकण गाँव और अब्दू गाँव के सज्जनों ने प्रार्थना कर कहा कि हम सब लोग भी पंचायतों की तरफ से आपको मनाने के लिये आये हैं। सो आप वहाँ पर भी पधारने की कृपा करें और कार्यक्रम बना कर दें तो वहाँ पर भी व्यवस्था की जाये। प्रेमी सज्जनों की प्रार्थना सुन कर गुरु महाराज जी सन्तों से पूछने लगे कि आप सब की क्या राय है? यह सुन कर सन्तों ने कहा कि यहाँ के लोगों का प्रेम तो बहुत ही है, शेष जो आपको उचित लगे वह करें।

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 अक्टूबर 2025

वर्ष 18 | अंक 7

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत
सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर–474001 (मध्यप्रदेश)
मोबा. 0751–4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751–4045144 पर अथवा व्हाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिंडु), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार–शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

गुरु का महत्व

चींटी कितनी छोटी ! उसको यदि हरिद्वार से ऋषिकेष की यात्रा करनी हो, तो लगभग 3–4 जन्म लेना पड़ेगा । लेकिन यही चींटी हरिद्वार जाने वाले व्यक्ति के कपड़े पर चढ़ जाये, तो सहज ही 3–4 घंटे में ऋषिकेश पहुंच जाएगी कि नहीं । ठीक इसी प्रकार अपने प्रयास से भवसागर पार करना कितना कठिन है ! पता नहीं कई जन्म लग सकते हैं । इसकी अपेक्षा यदि हम गुरु का हाथ पकड़ लें और उनके बताये सन्मार्ग पर श्रद्धापूर्वक चलें, तो वे आसानी से आपको भवसागर पार करा सकते है ।

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1–2
02.	गुरुकृपा से हुआ असाध्य रोग दूर– सद्गुरु टेऊँराम महिमा	4–5
03.	भक्त की रक्षा (प्रेरक प्रसंग)	5
04.	आचार्य श्री के परम उपासक सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज	6–7
05.	पवित्रतम कार्तिक मास	8–12
06.	गोपाष्टमी–गोपूजन का एक पवित्रतम दिन	13–14
07.	गौमाता की कृपा से राजा दिलीप की मनोरथ हुआ पूर्ण	15
08.	देवउठनी एकादशी का महात्म्य एवं कथा	16–17
09.	समर्पण (प्रेरक प्रसंग)	17
10.	तुलसी जी की अनन्त महिमा	18–19
11.	पवित्रतम कार्तिक मास	19
12.	श्री गुरुनानक देव एवं उनका संदेश	20–21
13.	मोर पंख (प्रेरक प्रसंग)	21
14.	दीपावली एवं कार्तिक मास भजन	22
15.	श्री अमरापुर स्थान जयपुर में कार्तिकोत्सव एवं गोपाष्टमी महोत्सव सूचना	23
16.	पूज्य महाराजश्री एवं सन्त मण्डली की छत्तीसगढ़ यात्रा दर्शन	24–25
17.	सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 129वां जन्मोत्सव सम्पन्न समाचार	26–27
18.	प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर वार्षिकोत्सव सम्पन्न समाचार	27
19.	आखिर वह क्या है ?	28–29
20.	भजन श्री हरकेश वधवा	30
21.	अमरापुर गमन	31–32
22.	व्रत – पर्व – उत्सव	32
23.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	33
24.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	34

गुरुकृपा से हुआ असाध्य रोग दूर

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम बाबा की अद्भुत महिमा

दिलगीर हो न दिल मेरे, दिलासा फकीर का।
सभ गल सतार पड़ता, पाछा फकीर का।।
जिस पर नज़र फकीर की, सो पातशाह है।
सो कभी न भुखा रहता, प्यासा फकीर का।।

साधु-संत-फकीरों की मौज! वे परमात्मा की बन्दगी कर रिझाते हैं उस प्रभु परमात्मा को! क्या अपना-क्या पराया! कोई लेना-देना नहीं! अपनी मस्ती में मस्त! सुख-दुःख, हर्ष- शोक, लाभ-हानि, सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास इस सभी से परे! अद्भुत स्थिति, स्थितप्रज्ञ! **'यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम'** परम पद को प्राप्त करने के लिये होते हैं योगी-संत-फकीर! इन्हीं दर्वेश फकीरों के पास होती है अद्भुत विलक्षण शक्ति! जब चाहे जो चाहे लीला रच दें. वे जहर को अमृत, अग्नि में शीतलता, जड़ को चेतन करने में सर्वशक्ति सम्पन्न! परमात्मा की सत्ता का भान कराने के लिये अथवा अज्ञानी जीवों को सत्मार्ग पर लाने के लिये अनेकों बार उन्हें परमात्मा की चमत्कारी शक्तियाँ उजागर करनी पड़ती हैं. उन्हें इन शक्तियों को दिखाने की आवश्कता नहीं- फिर भी मूढ़ अज्ञानी जीवों को परमात्म तत्त्व का बोध कराने के लिये समय-समय पर थोड़ी-थोड़ी लीला उजागर करते रहते हैं. फिर चाहे संत ज्ञानदेव द्वारा पत्थर की पहाड़ी को चलाना हो या संत नामदेव द्वारा भैंस से गायत्री मंत्र का जाप करवाना हो, गुरू नानक देव द्वारा एक हाथ की रोटी से दूध तो दूसरे हाथ की रोटी से रक्त निकालना! ऐसी शक्तियाँ प्रकट करते हैं. जिससे जीव परमात्मा को न भूले. सदैव परमात्मा में विश्वास-आस्था-श्रद्धा बंधी रहे. ऐसे ही सिंध प्रदेश के सिद्ध योगी सत्पुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी थे. जिन्होंने समय-समय पर अनेक लीलाएँ रचीं और परमात्म तत्त्व का बोध कराया.

ऐसे ही एक समय गुरू महाराज के प्यारे, भाई मूलचन्द मोदी की बहिन जो कि शरीर की पीड़ा से अत्यंत व्यथित थी. उसके हाथों में कोई असाध्य बीमारी हो गई थी, जो कई महीनों तक तरह-तरह का इलाज कराने के बाद भी छूट नहीं रही थी. भाई मूलचन्द मोदी और उसकी बहन का सद्गुरु सांई टेऊँराम बाबा में अटूट विश्वास और श्रद्धा थी. उन्हें जब कभी भी कोई दुःख-दर्द सताता तो बड़े श्रद्धा विश्वास के साथ सांई को याद करते थे. विश्वास में बड़ी शक्ति होती है. **'विश्वासं फल दायकम्'** विश्वास से सर्व मनोरथ सिद्ध होते हैं. गुरुदेव को तो भगवान से भी अधिक जानना चाहिये. जो कार्य करने में भगवान भी असमर्थ होते हैं वे सिद्ध महापुरुष गुरुदेव सहजता से पूर्ण कर देते हैं. ऐसा ही उस मूलचन्द मोदी की बहन के साथ भी हुआ. वह बार-बार सांई टेऊँराम बाबा को याद कर रही थी. सांई से कातर स्वर में प्रार्थना कर रही थी-सांई मेरा दुःख दर्द दूर कर दो. अन्तर्यामी घट-घट वासी श्री गुरुदेव भगवान ने उसकी भावभीनी पुकार सुन ली. अब यहाँ देखो- सांई टेऊँराम बाबा कौन सी लीला करते हैं- **उस बहन ने स्वप्न में देखा कि कोई महापुरुष उससे कह रहा है कि आपके हाथ श्री अमरापुर स्थान (डिब) पर जाने से ठीक जा जाएँगे. महापुरुषों का वचन कभी मिथ्या हो नहीं सकता, चाहे वो स्वप्न में ही क्यों नहीं कह रहे हों.**

किस वक्त कौन सी लीला करते हैं वे, उनकी लीला वो ही जानें. बस फिर क्या था- प्रातःकाल जागकर नवस्फूर्ति के साथ इस स्वप्न की बात भाई मूलचन्द मोदी को बताई. मन में पक्का निश्चय रखकर भाई मूलचन्द और उसकी बहन दोनों श्री अमरापुर दरबार (डिब) पर श्री गुरुदेव भगवान के पास आये. उस बहन ने अपने रोगग्रस्त हाथ सांई को दिखाये और स्वप्न वाली पूरी वार्ता भी सांई को कह सुनाई. सांई तो स्वयं अन्तर्यामी थे- कौन सी लीला कैसे करनी है, कैसे दुःखों से मुक्ति दिलानी है, ये सब जानते थे.

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

जो यौवन अवस्था में नम्रता धारण करते हैं
किसी भी जीव को बिना कारण दुःखाते नहीं, वे बड़े महात्मा है।

उस बहन ने बड़ी श्रद्धा विनम्रता से सांई से कहा- हे गुरुदेव! हमें तो आपके ऊपर पूर्ण दृढ़ विश्वास है, आप ही मेरे दुःख हरेंगे. ऐसा विश्वास है आपके कृपाशीर्वाद से मेरे हाथ ठीक हो जाएँगे.

समर्थ श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम बाबा जी ने उनसे कहा- पुत्री ! आप 'खरबत' नाम की एक जड़ी-बूटी आती है उसे घोटकर पीयो और उसका बचा हुआ शेष भाग (छाछ) हाथ पर बाँध दो- ऐसा कुछ दिन करते रहो- प्रभु परमात्मा सब ठीक करेंगे. महापुरुषों द्वारा बतलाया गया सत् संदेश अमृत का काम करता है. जीवन दान देने वाला होता है. जड़ी-बूटी के साथ-साथ उस समय कहा हुआ वचन अमृत प्रसाद होता है. उस समय महापुरुषों की रमझ-अलौकिक मस्ती अद्भुत और विलक्षण होती है. उस बहन ने वैसा ही किया जैसा श्री गुरुदेव सांई ने बतलाया था. महापुरुषों की उसके ऊपर महती कृपा हुई, वह शीघ्र ही पूर्णतः स्वस्थ हो गई. इसे कहते हैं संत-फकीरों का कृपा-प्रसाद ! जो समय-समय भक्तों के ऊपर बरसता रहता है.

ऐसे थे दुःख-दर्द तारनहार, विघ्नहर्ता सिद्ध समर्थ सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम जी महाराज! 'वन्दे महापुरुष ते चरणार्विन्दं.....'

&lk/kd] Jh vejkiqj njckj ¼fMc½]

भक्त की रक्षा

किसी गांव की छोटी सी कुटिया में सुखिया नाम की एक वृद्ध महिला रहती थी वह भगवान श्रीकृष्ण की परम भक्त थी । सुखिया के कृष्ण भक्त होने के कारण गांव वाले उसे कृष्णा बाई के नाम से बुलाते थे । घर-घर में झाड़ू, पोंछा, बर्तन और खाना बनाना ही उसका काम था । कृष्णा बाई रोज फूलों की माला बनाकर दोनों समय श्रीकृष्ण जी को पहनाती थी और घण्टों कान्हा से बातें करती थी । गांव के लोग सोचते थे कि बुढ़िया पागल है ।

एक रात श्रीकृष्ण जी ने अपनी भक्त कृष्णा बाई से यह कहा कि कल बहुत बड़ा भूचाल आने वाला है तुम यह गांव छोड़कर दूसरे गांव चली जाओ । अब बुढ़िया क्या करे, मालिक का आदेश था । कृष्णा बाई ने अपना सामान इकट्ठा करना शुरु किया और गांव वालों को बताया कि उसके सपने में कान्हा आए थे और उन्होंने बताया कि कल प्रलय होगी तुम यह गांव छोड़कर पास के गांव में चली जाओ ।

लोग कहाँ उस बूढ़ी पागल की बात मानने वाले थे, जो सुनता वही जोर-जोर से ठहाके लगाता । इतने में बाई ने एक बैलगाड़ी मंगाई, अपने कान्हा की मूर्ति ली और सामान की गठरी बांध कर गाड़ी में बैठ गई । लोग उसकी मूर्खता पर हंसते रहे । बाई अपने गांव की सीमा पार कर अगले गांव में प्रवेश करने ही वाली थी कि उसे कृष्ण की आवाज आई- अरे पगली जा अपनी झोपड़ी में से वह सुई ले आ जिससे तू माला बनाकर मुझे पहनाती है । यह सुनकर बाई बेचैन हो गई कि मुझसे भारी भूल कैसे हो गई, अब मैं कान्हा की माला कैसे बनाऊंगी ? उसने गाड़ी वाले को वहाँ रोका और बदहवास

अपनी झोपड़ी की तरफ भागी । गांव वाले उसके पागलपन को देखते और खूब मजाक उड़ाते । बाई ने झोपड़ी में तिनकों में फंसी सुई को निकाला और फिर पागल की तरह दौड़ते हुए गाड़ी के पास आई । गाड़ी वाले ने कहा कि माई तू क्यों परेशान है कुछ नहीं होना । बाई ने कहा अच्छा चल अब अपने गांव की सीमा पार कर । गाड़ी वाले ने ठीक वैसा ही किया ।

पर यह क्या ? जैसे ही सीमा पार हुई पूरा गांव ही धरती में समा गया । सब कुछ जलमग्न हो गया । गाड़ी वाला भी अटूट कृष्ण भक्त था । भगवान ने उसकी भी रक्षा करने में कोई विलम्ब नहीं की ।

प्रभु जब अपने भक्त की एक सुई तक की इतनी चिंता करते हैं तो वह भक्त की रक्षा के लिए कितने चिंतित होते होंगे । जब तक उस भक्त की एक सुई उस गांव में थी पूरा गांव बचा था । इसीलिए कहा जाता है कि -

भरी बदरिया पाप की, बरसन लगे अंगार ।
संत न होते जगत में, जल मरता संसार ॥

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश राम कृपा उसको प्राप्त होती है, जो पहले अपने आप पर कृपा करता है ।

आचार्य श्री के परम उपासक स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

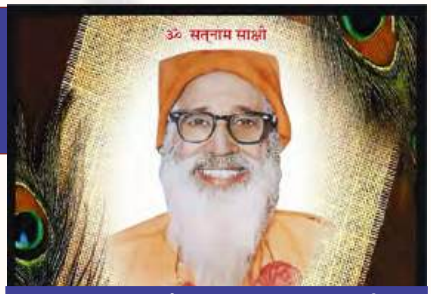

सद्गुरु सर्वानन्द जयंती विशेष

भारत देश की पावन धरा पर अनेक संतों-महापुरुषों का अवतरण हुआ है, सभी संतों-महापुरुषों ने न केवल भारत वासियों को सच्चा ज्ञान एवं सतत-कर्मों का मार्ग दिखाया है, अपितु दुनिया के समस्त समुदायों को अपनी वाणी से मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसका परिणाम है, आज भी देश-दुनिया के समुदाय इस पावन धरा व हमारे ऋषि-मुनियों, संतों-महात्माओं की तपःभूमि को नमन करने नियम से आते रहते हैं.

इन्हीं संत-महापुरुषों की कड़ी में एक शुभाशुभ नाम आता है- त्याग तपस्या की साक्षात् मूर्ति **महर्षि योगीराज सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** का. जो अनन्त दैवीय गुणों से परिपूर्ण थे. सच्चे गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने न केवल, अपने सद्गुरु महाराज, **प्रेम प्रकाश पंथ के बीजक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** की सेवा की वरन् उनके पावन उपदेशों की यशकीर्ति चहुँ ओर फैलाई एवं अपने सदुपदेशों से करोड़ों लोगों को सत्मार्ग की ओर अग्रसर किया.

महाराजश्री का शुभ अवतरण अविभाजित भारतवर्ष के सिन्धु प्रान्त में हैदराबाद जनपद की हाला तहसील के भिट्टशाह नामक गाँव में सम्वत् १९५४ के मंगलमय आश्विन् मास की शुक्ल चतुर्दशी (सिन्धी असू महीने की बारह तारीख), गुरु का गौरव बढ़ाने वाले पावन दिवस गुरुवार को प्रातःकाल माता ईश्वरी देवी व पिता सेवकराम के आँगन में हुआ. आपके ललाट पर अद्भुत तेज देखकर पिता सेवकराम ने ज्ञानी ब्राह्मणों को बुलवाया एवं आपके भविष्य के सम्बन्ध में पूछा. सभी वेदज्ञ पुरोहितों ने आपके तेजस्वी ललाट की दिव्य चमक देखकर भविष्यवाणी की कि **"यह बालक बड़ा होकर महान संत बनेगा"** नामकरण संस्कार उत्सव में आपका नाम (सीरू) सर्वानन्द रखा गया. सिन्ध प्रदेश के सुविख्यात आचार्य संत श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज आपके नामकरण संस्कार में सम्मिलित हुए. आपने जब बालक सर्वानन्द के मस्तक पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया तो बालक सर्वानन्द के चारों ओर विचित्र आभा मण्डल फैल गया, चेहरा ईश्वरीय शक्ति की दिव्य धारा से ओत प्रोत सा हो गया. माता-पिता के घर प्रतिदिन संध्याकालीन सत्संग व आरती होती थी. इससे बालक सर्वानन्द को बाल्यावस्था से ही सत्संगीय वातावरण सहज में ही प्राप्त हुआ. जैसे-जैसे आप बड़े होते गये नित्य प्रार्थना व भजन माता-पिता व संगत के साथ गाने लगे. धीरे-धीरे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ता गया. किशोरावस्था के समय आपने संसार के मायाजाल से छुटकारा पाने का दृढ़ निश्चय ही कर लिया एवं माता-पिता की आज्ञा से **युगपुरूष संत शिरोमणि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** की चरण-शरण में गये. आचार्यश्री ने आपकी सेवा श्रद्धा ईश्वरीय लगन देखकर आपको शिष्य रूप में स्वीकार किया. आपने अपने सद्गुरु महाराज की सेवा सुश्रूषा एकनिष्ठ होकर श्रद्धाभाव से की. आचार्यश्री आपकी सेवा निष्ठा से बहुत प्रसन्न रहते थे. आपको संत मण्डली के साथ रटन पर भी ले जाते थे. आचार्यश्री के अमरापुर धाम गमन के बाद संत मण्डल द्वारा श्री प्रेम

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

राम के नाम में बड़ी शक्ति है।
राम का नाम कल्पवृक्ष एवं चिन्तामणि की भाँति प्रत्येक इच्छा पूरी करता है।

प्रकाश मण्डल की बागडोर आपको सौंपी गई.

देश विभाजन की आशंका के चलते एक बार जब आचार्यश्री के साथ जयपुर में संत मण्डली का आगमन हुआ तो यहाँ पर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को अमरापुर दरबार की स्थापना के लिये गुरुदेव की रुचि संकेत हुआ. कालान्तर में देश विभाजन की त्रासदी के बाद आपके द्वारा जयपुर में आचार्यश्री के पावन मंदिर श्री अमरापुर दरबार (डिब्) की स्थापना आचार्यश्री के संकल्प को ध्यान में रखते हुए उसी स्थान पर की गई. जहाँ आज हम सब लाखों भक्तों के साथ नित्य शीश झुकाकर उस परम पावन धरा समाधि स्थल को नमन-वन्दन करके मनोरथ पाते हैं.

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जो शिक्षा सत्संग प्रवचनों में दिया करते थे, पहले स्वयं उस पर अमल करते थे. आपकी रहनी-सहनी बिल्कुल सादगी से भरी थी, आप अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाते थे कि सत्संग कल्पवृक्ष के समान है, जैसे कल्पवृक्ष की पूजा करने से मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, वैसे ही सत्संग से जीव को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों पदार्थ आसानी से मिल सकते हैं.

मोक्ष-ज्ञान व भक्ति विषय पर **सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** का कथन है कि कोई भी मनुष्य चाहे वह ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ अथवा संन्यासी क्यों न हो, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र किसी भी वर्ण का क्यों न हो, वह प्रयास करे तो गुरु कृपा से आत्म ज्ञान को पाकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है. ज्ञान व भक्ति का लक्ष्य परमात्मा है, परमात्मा का सम्बन्ध किसी जात-पात से नहीं है, जो भी सत्य धर्म का पालन करते हुए भगवान का भजन-स्तुति करेगा वह मोक्ष निश्चित पायेगा.

अपने सद्गुरु महाराज जी की दी हुई विद्या के बल पर आपने मन और इन्द्रियों को वश में रखकर शान्तचित्त रहकर, सभी दोषों से रहित होकर, परम्परा से प्राप्त गुरुमंत्र **'सत्नाम साक्षी'** और **प्रेम प्रकाश पंथ** के नियमों का ज्यों का त्यों पालन किया. आपने सदैव आचार्यश्री को ही ईश्वरीय रूप में व्यापक माना, अपने सत्संग प्रवचनों में आप कहते हैं कि ज्ञान, वैराग्य, मोक्ष आदि सब कुछ गुरुदेव की कृपा से ही मिल सकते हैं. **जो अंधकार से निकालकर प्रकाश में ले जावे, उसे 'गुरु' कहते हैं.** सत्गुरु की आज्ञाओं के अनुकूल आचरण करना ही गुरुभक्ति कहलाती है एवं 'गुरु-भक्ति' को ही 'हरि-भक्ति' कहते हैं. आपने न केवल प्रेम प्रकाश पंथ की अपितु आचार्यश्री की आभा व यशकीर्ति को चहुँ ओर फैलाया. इसी के साथ देश-विदेश के अनेक नगरों में प्रेम प्रकाश आश्रमों की स्थापना की. आपकी तपोस्थली जयपुर व हरिद्वार के भव्य आश्रमों के साथ-साथ देश दुनिया में वर्तमान में संचालित आश्रम, जो प्रेम प्रकाश पंथ की आत्मज्ञान रूपी खुशबू से सभी को आनन्दित करके उनका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं.

आप सदैव सत्संग वर्खा के उपरांत **सत्नाम साक्षी** व **साक्षी शिवोऽम्** की धुनि लगाकर सत्संग को विराम देते थे. 'यथा नाम तथा गुण' की उक्ति को अपने नाम के साथ चरितार्थ किया. **सर्व+आनन्द अर्थात् सभी को आनन्द देने वाले थे सद्गुरु सर्वानन्द !** देश विभाजन के पश्चात् आपने श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय जयपुर में **श्री अमरापुर स्थान** के नाम से स्थापित किया. यात्रा रटन के बाद आप अधिकांश समय जयपुर श्री गुरु दरबार (डिब्) व हरिद्वार आश्रम पर ही निवास करते थे. आपको गंगा मैया से विशेष लगाव था। वहां अनेक समय बैठकर भजन साधना करते थे।

भगवद् स्वरूप महायोगी आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम उपासक त्यागी, तपस्वी, महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन-वन्दन!

'साधक'
श्री अमरापुर स्थान
जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

किसी कामना हेतु फल की इच्छा-पूर्ति के लिये जो सेवा की जाती है वह सेवा नहीं कहलाती है।

कार्तिक माहात्म्य

पवित्रतम कार्तिक मास

भगवान् महादेव जी ने कार्तिकेय से कहा- वत्स! कार्तिक के समान कोई मास नहीं है, श्रीविष्णु से बढ़कर कोई देवता नहीं है, वेद के तुल्य कोई शास्त्र नहीं है और गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं है-

न कार्तिकसमो मासः न देवः केशवात्परः।
न वेदसदृशं शास्त्रं न तीर्थं गंगया समम्।।

(पद्मपुराण उ॰ 120/23-24)

एक बार की बात है दैवी सत्यभामा ने भगवान् से पूछा- प्राणनाथ! मैंने पूर्वजन्म में कौन-सा दान, तप अथवा व्रत किया था, जिससे मैं मर्त्यलोक में जन्म लेकर भी मर्त्यभाव से ऊपर उठ गयी और मुझे आपकी प्रिय अर्धांगिनी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ.

इस पर भगवान् ने कहा- प्रिये! यह तुमने अच्छी बात पूछी है, ध्यान देकर सुनो, मैं यह रहस्य बताता हूँ.

हरिद्वार में एक धर्मात्मा ब्राह्मण रहते थे, जिनका नाम था देवशर्मा. वे वेदवेदांगों के पारंगत, अतिथिसेवी तथा भगवान् सूर्य की नित्य आराधना करते थे. उन्हें कोई पुत्र नहीं था, केवल एक पुत्री थी, जिसका नाम था गुणवती. उन्होंने अपने एक प्रिय शिष्य के साथ गुणवती का विवाह कर दिया. एक दिन वे दोनों गुरु-शिष्य समिधा लाने वन में गये हुए थे, दुर्भाग्य से एक भयंकर राक्षस ने उन्हें मार डाला.

गुणवती को जब यह समाचार मिला तो वह शोक से दुःखित हो करुण-विलाप करने लगी. किसी तरह धीरे-धीरे उसने अपने को स्वस्थ किया. अब वह सत्य-शौच आदि के पालन में तत्पर हो भगवान् विष्णु की आराधना में समय बिताने लगी. उसने अपने जीवन भर दो व्रतों का विधिपूर्वक पालन किया- एक तो एकादशी का उपवास और दूसरा कार्तिक मास का भलीभाँति सेवन. भगवान् बोले- प्रिये! ये दोनों व्रत मुझे बहुत ही प्रिय हैं. ये पुत्र उत्पन्न करने वाले, पुत्र और सम्पत्ति के दाता तथा भोग और मोक्ष प्रदान करने वाले हैं.

वह गुणवती प्रति वर्ष कार्तिक का व्रत किया करती थी और भगवान् विष्णु की परिचर्या में निरत रहा करती थी. धीरे-धीरे गुणवती की अवस्था अधिक होती गयी. उसके अंग शिथिल हो गये और वह ज्वर से भी पीड़ित रहने लगी, लेकिन उसका गंगास्नान का नियम था. ऐसी अशक्तावस्था में भी वह किसी तरह स्नान के लिये गयी. ज्यों ही जल के भीतर उसने पैर रखा, त्यों ही शीत की पीड़ा से वह काँप उठी और वहीं पर गिर पड़ी. उसी समय उसने देखा कि आकाश से एक दिव्य विमान उतर रहा है, जिसमें शंख-चक्रधारी विष्णुपार्षद विद्यमान हैं. भगवान् की भक्ति और कार्तिकव्रत का ही यह प्रभाव था. पार्षदों ने उससे विमान पर बैठने का निवेदन किया. भगवत्कृपा से उसका शरीर दिव्य हो गया था, वह विमान पर बैठी, पार्षद चँवर डुलाने लगे और उसे वैकुण्ठ ले चले. हे प्रिये! कार्तिक व्रत के पुण्य से ही उसे मेरा सानिध्य प्राप्त हुआ.

हे देवि! अब रहस्य की बात सुनो. देवताओं की प्रार्थना पर मैंने जब पृथ्वी पर अवतार धारण किया तो मेरे पार्षद भी मेरे साथ ही आये. तुम्हारे पिता जो देवशर्मा थे, वे ही अब सत्राजित् हुए हैं और तुम पूर्वजन्म की गुणवती हो. पूर्व जन्म में कार्तिक व्रत के पुण्य से तुमने मेरी प्रसन्नता को बहुत बढ़ाया है, वहाँ तुमने मेरे मन्दिर के द्वार पर जो तुलसी की वाटिका लगा रखी थी. इसी से तुम्हारे आँगन में आज देवोद्यान का कल्पवृक्ष शोभा पा रहा है. पूर्वजन्म के कार्तिकमास के दीपदान से ही तुम्हारे घर में स्थिर लक्ष्मी ओर ऐश्वर्य प्रतिष्ठित है. तुमने अपने व्रत आदि सभी कर्मों को भगवान् को निवेदन किया था, उसी पुण्य से तुम मेरी अर्धांगिनी हुई हो. मृत्युपर्यन्त तुमने जो कार्तिक व्रत का अनुष्ठान किया, उसके प्रभाव से तुम्हारा मुझसे कभी वियोग नहीं होगा. इसी प्रकार अन्य जो भी स्त्री-पुरुष कार्तिक व्रत परायण होते हैं, वे मेरे समीप आते हैं.

भगवान् के मुख से अपने पुण्यमय पूर्वजन्म के वैभव एवं कार्तिक व्रत की बात सुनकर देवी सत्यभामा को अत्यन्त हर्ष हुआ.

पुनः सत्यभामा जी ने पूछा- प्रभो! तिथियों में एकादशी और महीनों में कार्तिक आप को विशेष प्रिय क्यों है, इसे बताने की कृपा करें.

तब भगवान् ने कहा- पूर्वकाल में शंख नामक एक महान् असुर था, वह समुद्र का पुत्र था, उसने देवताओं को परास्त कर वहाँ अपना अधिकार कर लिया और वेदों का हरण कर लिया. ब्रह्माजी को आगे कर सभी देवता वैकुण्ठलोक में भगवान् विष्णु की शरण में गये. उस दिन कार्तिक के शुक्लपक्ष की एकादशी तिथि थी. भगवान् शयन कर रहे थे, उस समय

जग गये और प्रसन्न होकर बोले- हे देवों! तुम्हारे पूजन, जागरण आदि से मैं प्रसन्न हूँ. आज के दिन इसी प्रकार जब एक प्रहर रात्रि बाकी रहे, जो उस समय मेरी आराधना करेगा, वह मुझे प्रसन्न करने के कारण मेरा सामीप्य प्राप्त करेगा. आज से कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी हरिबोधिनी-प्रबोधिनी एकादशी कहलायेगी. हे देवों! शंखासुर द्वारा चुराये गये सभी वेद उसने जल के अन्दर छुपाकर रखे हैं, मैं उसका वधन करके उन्हें ले आऊँगा. आज से लेकर सदा ही प्रतिवर्ष कार्तिक मास में वेद जल में विश्राम करेंगे और मैं प्रतिवर्ष कार्तिक मास में जल के भीतर निवास करूँगा. अतः जो लोग कार्तिक मास में नित्य प्रातः स्नान करेंगे, उन्हें अक्षय पुण्य प्राप्त होगा. एकादशी को मेरा प्रबोधन हुआ, इसलिये यह तिथि मुझे अति प्रिय होगी. कार्तिक मास और एकादशी तिथि- ये दोनों मेरे सान्निध्य की प्राप्ति कराने वाले हैं.

कार्तिक स्नान विधि- एक बार नारदजी ने राजा पृथु के कार्तिक मास के विषय में पूछने पर उनसे कहा- राजन्! आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी आती है. उस दिन कार्तिक मास के उत्तम व्रतों का नियम ग्रहण करे. व्रत करने वाला पुरुष एक रात्रि शेष रहे, तभी जग जाय. फिर शौच आदि से निवृत्त होकर तिल, कुश, अक्षत, फल तथा चन्दन आदि लेकर जलाशय के तट पर जाय. कोई पोखरा हो, देवकुण्ड हो या नदी हो अथवा संगम हो- इनमें उत्तरोत्तर दस गुने पुण्य की प्राप्ति होती है. तीर्थ में स्नान का अनन्त फल होता है. तदनन्तर तीर्थ को प्रणाम करे और भगवान् का स्मरण कर स्नान का संकल्प करे और स्नान से पूर्व निम्न मंत्रों से भगवान् की प्रार्थना करे और उनसे स्नान करने की आज्ञा प्राप्त करे-

कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातःस्नानं जनार्दन।
प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह।।
ध्यात्वाहं त्वां देवेश जलेऽस्मिन् स्नातुमुद्यतः।
तव प्रसादात्पापं मे दामोदर विनश्तु।।

(पद्म पुराण उत्तर॰ 95/7-8)

हे जनार्दन! हे देवेश! हे लक्ष्मीपति दामोदर! मैं आपकी प्रसन्नता के लिये कार्तिक में प्रातः स्नान करूँगा. हे देवेश्वर! आपका ध्यान करके मैं इस जल में स्नान करने को उद्यत हूँ. हे दामोदर! आपकी कृपा से मेरा पाप नष्ट हो जाय.

तदनन्तर गंगा आदि पुण्यतोया नदियों में स्नान करे. कार्तिक में काशी में पंचगंगा स्नान का बहुत महत्त्व है. गृहस्थ पुरुष को तिल और आँवले का चूर्ण लगाकर स्नान करना चाहिये और संन्यासी तुलसी के मूल की मिट्टी लगाकर स्नान करे. सप्तमी, अमावस्या, नवमी, द्वितीया, दशमी और त्रयोदशी को आँवला चूर्ण और तिल के द्वारा स्नान निषिद्ध है.

स्नान के अनन्तर विधिपूर्वक देवता, ऋषि, मनुष्य (सनकादि) तथा पितृतर्पण करे. तदनन्तर वस्त्र धारण कर प्रातः कालोचित सन्ध्यादि नित्यकर्म करे और फिर भगवान् का पूजन करे. विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करे. इसके बाद गन्ध, पुष्प, फल से युक्त अर्ध्य भगवान् राधा-दामोदर को निम्न मन्त्र से अर्पित करे-

व्रतिनः कार्तिके मासि स्नातस्य विधिवन्मम।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं राधया सहितो हरे।।

इसके अनन्तर वैदिक विद्वानों का पूजन करे, फिर तुलसी का पूजन करे. पूजन के अनन्तर निम्न मन्त्र से तुलसी की प्रदक्षिणा और नमस्कार करे-

देवैस्त्वं निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः।
नमो नमस्ते तुलासि पापं हर हरिप्रिये।।

हे हरिप्रिया तुलसीदेवि! पूर्वकाल में देवताओं ने आपको उत्पन्न किया और मुनीश्वरों ने आपकी पूजा की. आपको बार-बार नमस्कार है. आप मेरे पापों को हर लें. तदनन्तर पुराण कथा आदि का श्रवण करें और अपने व्रत के कर्मों का यथाविधि पालन करें.

कार्तिक व्रत के नियम- अन्नदान देना, गौओं को ग्रास अर्पण करना, भगवद्भक्तों का संग करना तथा दीपदान करना- ये कार्तिक व्रती के मुख्य कर्म हैं. कार्तिक में अन्नदान की बड़ी भारी महिमा है. कार्तिक व्रत करने वाला निन्दा का सर्वथा परित्याग कर दे. व्रती को चाहिये कि वह ब्रह्मचर्य का पालन, भूमि पर शयन, पत्तल पर भोजन और एक बार हविष्यान्न या फलाहार ग्रहण करे. कार्तिक में तेल लगाना, पलंग पर सोना, दूसरे का अन्न लेना और काँसे के बर्तन में भोजन करना तथा चना, मटर आदि द्विदलयुक्त दालों आदि पदार्थों का परित्याग करना चाहिये.

कार्तिक मास में हरि जागरण, राधा-दामोदर की पूजा तथा आकाश दीपदान का विशेष माहात्मय है. इस मास में किया गया सत्कर्मानुष्ठान अक्षय फलदायी तथा भगवान् विष्णु की प्रीति प्राप्त कराने वाला होता है. पुराणों में कार्तिक में भगवन्नाम कीर्तन की बड़ी महिमा आयी है और बताया गया है कि **'गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे गोविन्द गोविन्द मुकुन्द**

कृष्ण। गोविन्द गोविन्द रथाँगपाणे गोविन्द दामोदर माधवेति।।'- इस प्रकार से उनके नामों का कीर्तन नित्य-निरन्तर करना चाहिये. इस मास में गीता पाठ के पुण्य की महिमा बहुत है. ब्रह्माजी नारदजी से कहते हैं कि कार्तिक में गीतापाठ के पुण्य की महिमा बताने की शक्ति मुझमें नहीं है-

कार्तिके मासि विप्रेन्द्र यस्तु गीतां पठेन्तरः।
तस्य पुण्यफलं वक्तुं मम शक्तिर्न विद्यते।।

(स्कन्द पुराण वैष्णव॰ का॰ मा॰ 2/49)

सामान्यतया कार्तिक का व्रत आश्विन शुक्ल पक्ष एकादशी से आरम्भ करके कार्तिक शुक्ल दशमी को पूर्ण करे अथवा आश्विन की पूर्णिमा को आरम्भ करके कार्तिक की पूर्णिमा को पूरा करे. ब्रह्माजी नारदजी से कहते हैं जो कार्तिक मास में तुलसीवृक्ष के नीचे राधा-कृष्ण की युगल मूर्ति अथवा भगवान् श्रीकृष्ण का पूजन करते हैं, उन्हें जीवन्मुक्त समझना चाहिये.

तुलसी के अभाव में आँवले के नीचे पूजा करनी चाहिये. कार्तिकमास में पलाश के पत्तल में भोजन करने की बड़ी महिमा है. यह पलाश भगवान् ब्रह्माजी के अंश से उत्पन्न हुआ है. कार्तिक मास में दीपदान करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और महान् श्री, सौभाग्य और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है. इसलिये कार्तिक मास भर आकाश दीप जलाना चाहिये. दीपक जलाते समय निम्न मन्त्र पढ़ना चाहिये-

दामोदराय विश्वाय विश्वरूपधराय च।
नमस्कृत्वा प्रदास्यामि व्योमदीपं हरिप्रियम्।।

भाव यह है कि मैं सर्वस्वरूप एवं विश्वरूपधारी भगवान् दामोदर को नमस्कार करके आकाशदीप देता हूँ, जो भगवान् को परम प्रिय है.

इस मास में तुलसी से दामोदर का पूजन तथा तुलसी वृक्ष का रोपण बड़े ही महत्त्व का है. कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को आँवलेके पूजन का विधान है. यह चतुर्दशी वैकुण्ठ चतुर्दशी कहलाती है. इस दिन आँवले की छाया में राधा सहित श्रीहरि का पूजन करके आँवले की प्रदक्षिणा करनी चाहिये. ब्रह्माजी के अश्रुविन्दुओं से आँवले का वृक्ष उत्पन्न हुआ है, जो विष्णु को अतिप्रिय है.

त्रिकार्तिकी- यदि किसी कारणवश पूरे कार्तिक मास का व्रत न लिया जा सके तो कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की अन्तिम तीन- त्रयोदशी, चतुर्दशी तथा पूर्णिमा तिथियों पर भी यथाविधि कार्तिकमास के नियमों का पालन करे तो पूरे कार्तिक मास स्नान का फल प्राप्त हो जाता है. ये तिथियाँ अतिपुष्करिणी कही गयी हैं और यह तीन दिनों का व्रत 'त्रिकार्तिकी' कहलाता है. त्रयोदशी में समस्त वेद प्राणियों को पवित्र करते हैं, चतुर्दशी में यज्ञ और देवता सब जीवों को पावन बनाते हैं और पूर्णिमा में भगवान् विष्णु से अधिष्ठित सभी तीर्थजल प्राणियों को शुद्ध करते हैं. अतः इन तीन दिनों में विशेष रूप से ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये, गीता, विष्णुसहस्त्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष आदि का पाठ तथा दान एवं जप करना चाहिये.

चातुर्मास्य व्रत- आषाढ़ शुक्ल पक्ष में एकादशी तिथि को भगवान् ने शंखासुर को मारा था, जिसने वेदों को चुरा लिया था, अतः उसी दिन से आरम्भ करके भगवान् चार मास तक क्षीर समुद्र में शयन करते हैं और कार्तिक शुक्ल एकादशी को जागते हैं. इस कारण एकादशी को निम्न मन्त्र का उच्चारण कर भगवान् को जगाना चाहिये-

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यमंगलं कुरु।।

हे गोविन्द! उठिये! उठिये, हे गरुडध्वज! उठिये, उठिये, हे कमलाकान्त! निद्रा का त्याग कर तीनों लोकों का मंगल कीजिये.

अतः आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक इन चार मासों में विशेष रूप से व्रत के नियमों का पालन करे. संन्यासी आदि महात्मा प्रायः किसी एक ही स्थान पर रहकर संयम-नियम पूर्वक सत्संग-कथा वार्ता आदि करते हैं.

उद्यापन विधि- व्रती मनुष्य को कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को व्रत की पूर्ति तथा भगवान् विष्णु की प्रसन्नता के लिये उद्यापन करना चाहिये. तुलसी के ऊपर एक सुन्दर मण्डप बनाये, उसे वन्दनवार, तोरणों आदि से अलंकृत करे. तुलसी के मूल के समीप वेदी पर सर्वतोभद्र मण्डल के ऊपर सुन्दर कलश की स्थापना करे और कलश में लक्ष्मी सहित भगवान् विष्णु की स्वर्णमयी प्रतिमा की प्रतिष्ठा कर यथाविधि पूजन करे. रात्रि में गीत, वाद्य आदि के द्वारा जागरण करे.

पूर्णिमा को प्रातःकाल सपत्नीक ब्राह्मण को भोजन के लिये निमन्त्रित करे. इस दिन किया हुआ दान, तप, जप अक्षय होता है. विष्णु तथा तुलसी का पूजन करे. गौ की पूजा करे. तदुपरान्त सपत्नीक आचार्य का पूजन करे. तदुपरान्त आचार्य को भोजन आदि कराकर दक्षिणा आदि देकर वह सुवर्णमयी विष्णु प्रतिमा भी दान कर दे. तत्पश्चात् बन्धु-बान्धवों के साथ स्वयं भी भोजन करे. इस प्रकार उद्यापन पूर्ण करे. इस दिन

दीपक जलाने चाहिये. काशी में यह तिथि देव-दीपावली के रूप में मनायी जाती है और माँ गंगा को दीप समर्पित किये जाते हैं.

कार्तिक मास व्रत की बहुत बड़ी महिमा है. स्वयं भगवान् कहते हैं- वनस्पतियों में तुलसी, महीनों में कार्तिक, तिथियों में एकादशी तथा पुण्यक्षेत्रों में द्वारकापुरी मुझे विशेष प्रिय है-

वनस्पतीनां तुलसी मासानां कार्तिकः प्रियः।
एकादशी तिथीनां च क्षेत्राणां द्वारका मम।।

(पद्म पुराण उत्त॰ 114/3)

कार्तिक मास के व्रत पर्वोत्सव

कार्तिक मास पुण्यार्जन का मास है, व्रत-पर्वों तथा महोत्सवों द्वारा भगवान् की आराधना का मास है. यम-नियम, संयम तथा भगवत्कथा-वार्ता-श्रवण का मास है, व्रतियों तथा साधकों के लिये विशेष उपासना का मास है. इस मास की प्रत्येक तिथि में कोई-न-कोई पर्व-उत्सव मनाया जाता है और भगवत्प्रीति का उल्लास मनाया जाता है. दीपों का पर्व दीपावली इसी मास का उत्सव है, यह मास हमारे जीवन के अन्धकार को दूर कर हमें प्रकाश की ओर ले जाने की प्रेरणा देता है. इस मास के प्रधान पर्वोत्सवों की एक संक्षिप्त तालिका यहाँ प्रस्तुत है-

कार्तिक कृष्ण पक्ष

1. करवा चौथ (करक चतुर्थी)- कार्तिक कृष्ण की चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी को यह व्रत किया जाता है. यह व्रत अखण्ड सौभाग्य को देने वाला है, सौभाग्यवती स्त्रियाँ पति की दीर्घायु के लिये इसे करती हैं. सायंकाल चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जाता है. शिव-पार्वती तथा कार्तिकेय का पूजन होता है.

2. गोवत्सद्वादशी- कार्तिक कृष्ण द्वादशी को गायों तथा बछड़ों का शृँगार कर उनका पूजन किया जाता है. यह गोपूजन का उत्सव है.

3. कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी- यह पर्व धनतेरस या धन-त्रयोदशी कहलाता है. इस दिन सायंकाल घर के दरवाजे पर यमराज के निमित्त दीपदान होता है तथा नयी वस्तुओं को खरीदना शुभ माना जाता है. इस दिन यमुना स्नान का विशेष माहात्मय है. इसी दिन भगवान् धन्वन्तरि का जन्मोत्सव भी मनाया जाता है.

4. गोत्रिरात्रव्रत- कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी से अमावस्या तक तीन दिन विशेष रूप से गोशाला या गायों के आने-जाने के मार्ग में वेदी के ऊपर सर्वतोभद्र का निर्माण कर उसमें भगवान् गोवर्धन तथा उनकी आठों पटरानियों रुक्मिणी, मित्रविन्दा आदि की तथा नन्दबाबा, बलभद्र, यशोदा, श्रीकृष्ण और गौओं की प्रतिमा स्थापित कर उनका पूजन होता है और गौ को अर्घ्य दिया जाता है. यह पुत्र, सुख-भोग तथा गोलोक की प्राप्ति कराने वाला व्रत है.

5. नरक चतुर्दशी- नरक-यातना न भोगनी पड़े, इस आशय से यमराज की प्रीति के लिये कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी का पर्व मनाया जाता है. यमराज के नाम से यमतर्पण होता है तथा यम के उद्देश्य से दीपदान होता है. इसी तिथि को हनुमज्जन्म- महोत्सव भी मनाया जाता है.

6. दीपावली- कार्तिक अमावस्या को दीपों का उत्सव दीपावली मनाया जाता है. इस दिन धन की देवी महालक्ष्मी एवं गणेशजी का पूजन होता है और रात्रिशेष रहते घर से दरिद्रा का निःसारण किया जाता है.

कार्तिक शुक्ल पक्ष

1. अन्नकूट महोत्सव- कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन की पूजा कर अन्नकूट-महोत्सव होता है. अनेक प्रकार के भक्ष्य-भोज्यादि पदार्थों को बनाकर भगवान् को भोग लगाया जाता है. मन्दिरों आदि में विशेष रूप से नैवेद्यान्नों का कूट (पर्वत) बनाया जाता है और पूजन के अनन्तर प्रसाद वितरण होता है. इन्द्र के द्वारा की गयी प्रबल वृष्टि से रक्षा के लिये भगवान् ने गोवर्धन पर्वत को उठाकर समस्त व्रजवासियों की रक्षा की थी, तभी से गोवर्धन-पूजा का यह पर्व प्रचलित हुआ.

2. यमद्वितीया (भैयादूज)- कार्तिक मास में शुक्ल पक्ष की द्वितीया को यमराज ने अपनी बहन यमुना के घर जाकर भोजन किया था और उसे वर दिया था. इसी उपलक्ष्य में यह त्यौहार होता है. इस दिन यमुनास्नान, यम पूजन और बहन के घर में भोजन करने की विधि है.

3. सूर्यषष्ठी- कार्तिक शुक्ल षष्ठी मुख्य रूप से सूर्याराधना का पर्व है. इसमें षष्ठी तिथि को फल-पुष्प, पकवान आदि नैवेद्य लेकर नदी तट पर सूर्य का पूजन कर सूर्य को सायंकालीन अर्ध्य प्रदान किया जाता है. गंगा को दीपदान होता है. दूसरे दिन सूर्योदय के समय सूर्यदेव को अर्ध्य देकर व्रत पूर्ण होता है.

4. गोपाष्टमी- यह गौओं के पूजन का उत्सव है, कार्तिक शुक्ल अष्टमी को विशेष रूप से गौओं तथा गोपालकों का पूजन होता है. गोशालाओं में इसे विशेष रूप से मनाया जाता है.

5. अक्षयनवमी- कार्तिक शुक्ल नवमी अक्षय-नवमी है, इस दिन किया गया सारा पुण्यानुष्ठान अक्षय फलदायी होता है. इस दिन आँवले के वृक्ष के नीचे पूजन, ब्राह्मणभोजन आदि का विशेष माहात्मय है. साथ ही कूष्माण्डदान भी होता है.

6. देवोत्थापनी एकादशी- यह कथा है कि भगवान् विष्णु आषाढ़ शुक्ल एकादशी को क्षीरसागर में शयन करते हैं और कार्तिक शुक्ल एकादशी को जगते हैं. अतः उनके जागरण की यह तिथि देवोत्थापनी या हरिबोधिनी एकादशी कहलाती है. इस दिन व्रत तथा रात्रि जागरण और विष्णुपूजन का विशेष महत्त्व है. इस दिन तुलसी-विवाह का उत्सव भी होता है.

7. वैकुण्ठ चतुर्दशी- इस दिन वैकुण्ठाधिपति भगवान् विष्णु की विशेष पूजा होती है.

8. भीष्मपंचक व्रत- कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक पाँच दिन ब्रह्मचर्यपूर्वक महाभागवत श्री भीष्म पितामह जी को अर्ध्य प्रदान किया जाता है और भगवान् विष्णु का तुलसी- मंजरी से पूजन होता है.

9. कार्तिक पूर्णिमा- यह कार्तिक मास का अन्तिम पर्व है. इस तिथि को स्नान-दान तथा तप की बड़ी महिमा है. जो लोग कार्तिक मास का व्रत लिये रहते हैं, आज के दिन व्रत को पूर्ण करते हैं. सायंकाल सत्यनारायण कथा-श्रवण करते हैं तथा मासव्रत-उद्यापन की विधि पूरी करते हैं. इस दिन सायंकाल घर-बाहर तथा सर्वत्र दीपक जलाये जाते हैं. इस दिन सायंकाल भगवान् का मत्स्यावतार हुआ था, अतः मत्स्य-जयंती पर्व भी मनाया जाता है. सिक्ख धर्मावलम्बी इस दिन गुरुनानकदेव जी की जयन्ती का प्रकाश-पर्व मनाते हैं. इस दिन यदि कृत्ति का नक्षत्र हो तो यह पर्व महाकार्तिकी कहलाता है. इस तिथि को गंगा आदि नदियों के तट पर या मन्दिरों आदि में मेले भी लगते हैं. इस दिन किया गया स्नान, जप, तप, सत्कर्मानुष्ठान, यम-नियम पालन अक्षय फलदायी होता है-

'तस्यां दत्तं हुतं जातं दशयज्ञफलं स्मृतम्' (पद्मपुराण).

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं- सज्जन और दुर्जन। दोनो के स्वभाव न्यारे न्यारे होते हैं। सज्जन पुरूष सबसे गुण ग्रहण करते हैं, जबकि दुर्जन मनुष्य भले मनुष्यों से भी अवगुण ही उठाते हैं।

गोपाष्टमी -गो पूजन का एक पवित्रतम दिन

गोपाष्टमी भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख पर्व है. गायों की रक्षा करने के कारण भगवान श्रीकृष्ण जी का अतिप्रिय नाम 'गोविन्द' पड़ा. भगवान् ने बाल अवस्था में कार्तिक शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा से सप्तमी तक गो-गोप-गोपियों की रक्षा के लिए गोवर्धन पर्वत धारण किया था. उसी समय से अष्टमी को गोपाष्टमी का पर्व मनाया जाने लगा, जो कि वर्तमान समय तक बड़े ही भाव-भक्ति के साथ सनातन धर्मावलम्बियों द्वारा मनाया जाता है.

सनातन संस्कृति में गाय को 'माँ' का स्थान प्राप्त है; क्योंकि जैसे एक माँ का हृदय कोमल होता है, वैसे ही गोमाता का होता है. जैसे एक माँ अपने बच्चों को हर स्थिति में सुख देती है, वैसे ही गोमाता भी हर समय मनुष्य जाति को लाभ प्रदान करती है.

शास्त्रों में गोपाष्टमी महापर्व पर गायों की विशेष पूजा करने का विधान है. इसलिए कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को प्रातःकाल गौओं को स्नान कराकर, उन्हें सुसज्जित करके गंध पुष्पादि से उनका पूजन करना चाहिए. इसके पश्चात् यदि संभव हो तो गायों के साथ कुछ दूर तक चलना चाहिए- कहते हैं ऐसा करने से प्रगति के मार्ग प्रशस्त होते हैं. गायों को उनका भोजन कराना चाहिए तथा उनकी चरण रज को मस्तक पर लगाना चाहिए, ऐसा करने से सुख सौभाग्य की वृद्धि होती है.

पर्व से जुड़ी प्रसिद्ध पौराणिक कथाएँ-

गाय का दूध, घी, दही, छाछ यहाँ तक कि मूत्र गोबर भी मनुष्य जाति के स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होता है. गोपाष्टमी त्योहार से सम्बन्धित पौराणिक कथाओं के अनुसार--

पौराणिक कथा-1 : जब बाल गोपाल ने मानव जीवन के छठवें वर्ष में कदम रखा. तब अपनी मैया यशोदा से जिद्द करने लगे कि वे अब बड़े हो गये हैं और बछड़ों को चराने की बजाय वे गायों को चराना चाहते हैं. उनके हठ के आगे मैया को हार माननी पड़ी और यशोदा माता ने उन्हें अपने पिता नन्दबाबा के पास इसकी आज्ञा लेने के लिए भेज दिया. भगवान नन्दलाला ने नन्द बाबा के सम्मुख भी जिद्द की कि अब वे गैया ही चरायेंगे. नन्द बाबा गैया चराने के मुहूर्त के लिए, शांडिल्य ऋषि के पास पहुँचे. बड़े अचरज में आकर ऋषि ने कहा कि अभी इसी समय के अलावा कोई शेष मुहूर्त ही नहीं है अगले बरस तक. शायद भगवान की इच्छा के आगे मुहूर्त क्या था. जब भगवान गोविन्द गोपाल ने गोपूजन करके गोपालन शुरू किया- उस दिन कार्तिक महीने की अष्टमी थी, इसलिए तब से इस अष्टमी का नाम गोपाष्टमी पड़ा. इस दिन माता यशोदा ने अपने कान्हा को बहुत ही सुन्दर रूप से तैयार किया. मोरपँख का मुकुट लगाया, पैरों में घुँघरू पहनाये, सुंदर-सी पादुका पहनने को दी लेकिन गोपालक गोपाल ने वे पादुकाएँ नहीं पहनीं. उन्होंने मैया से कहा- अगर तुम इन सभी गायों को चरण पादुका पैरों में बाँधोगी तब ही मैं यह पहनूँगा. मैया ये सुनकर भावुक हो जाती है और बाल कृष्ण पैरों में बिना कुछ पहने अपनी गैया को चारण के लिए ले जाते. गौ-चारण के कारण ही भगवान श्रीकृष्ण को गोपाल या गोविन्द के नाम से भी जाना जाता है. आगे- आगे गायें और पीछे पीछे बाँसुरी बजाते नटखट कृष्ण कन्हैया, बलराम और बाल गोपाल के सखा ग्वाल-गोपाल इस प्रकार से विहार करते हुए भगवान् ने वन में प्रवेश किया तब से भगवान् की गो-चारण लीला प्रारम्भ हुई.

पौराणिक कथा-2 : ब्रज में इन्द्र का प्रकोप इस तरह बरसा कि लगातार बारिश ने पूरे ब्रज को जलमग्न कर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जिसको गुरु कृपा का कण मिल जाता है, उसकी समस्त क्रियाएँ बदल जाती हैं।

दिया. इसे बचाने के लिए गोवर्धनधारी भगवान श्रीकृष्ण ने ७ दिन तक गोवर्धन पर्वतको अपनी सबसे छोटी अँगुली पर उठाये रखा. गोवर्धन जिस दिन धारण किया था- वह था दीपावली का अगला दिन- इसलिए इस दिन गोवर्धन पूजा की जाती है. और कार्तिक अष्टमी के दिन भगवान इन्द्र ने अपनी पराजय स्वीकार करके भगवान श्रीकृष्ण के समक्ष समर्पण किया था, इसके बाद ही गिरिवरधारी भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को नीचे रखा था. भगवान ने स्वयं गोमाता की सेवा करते हुए, गाय के महत्त्व को सभी के सामने रखा. गोसेवा के कारण ही इन्द्र ने उनको गोविन्द नाम से पुकारा.

पौराणिक कथा-3 : गोपाष्टमी से जुड़ी एक कथा यह भी आती है कि भगवती स्वरूपा राधा भी गाय चराने के लिए वन में जाना चाहती थी, लेकिन लड़की होने की वजह से उन्हें इस बात के लिए कोई हाँ नहीं करता था. तब राधा को एक तरकीब सूझी, उन्होंने ग्वालों जैसे कपड़े पहने और वन में श्रीकृष्ण के साथ आज ही के दिन गायें चराने पहुँच गई.

नटखट बाल गोपाल की गोचारण के लिए यह लीला भी आती है कि-

भगवान् ने जब आयु के पाँच वर्ष पूर्ण किये तब माता यशोदा से बोले- मैय्या, अब हम बड़े हो गये हैं.

मैय्या : अच्छा लल्ला, अब तुम बड़े हो गये हो बताओ अब क्या करें.

गोपाल : अब हम बछड़े चराने नहीं जाएँगे, अब तो हम गाय चराएँगे.

मैय्या : ठीक है, बाबा से पूछ लेना, मैय्या के इतना कहते ही झट से मुरलीधर नन्द बाबा से पूछने पहुँच गए..

बाबा ने कहा : लाला अभी तुम बहुत छोटे हो, अभी तुम बछड़े ही चराया करो...

नन्दलाला : बाबा, अब मैं बछड़े नहीं गायें चराऊँगा...

जब भगवान नहीं माने तब बाबा बोले : ठीक है लाल, तुम पंडित जी को बुला लाओ- वह गोचारण का मुहूर्त देख कर बता देंगे.

बाबा की बात सुनकर भगवान् तुरंत ही पंडित जी के पास पहुँचे और बोले- पंडित जी! आपको बाबा ने बुलाया है, गोचारण का मुहूर्त देखना है, आप आज ही का मुहूर्त बता देना- मैं आपको बहुत सारा माखन दूँगा.

पंडितजी नन्द बाबा के पास आते हैं और बार-बार पँचाग देखकर गणना करने लगे. तब नन्द बाबा ने पूछा, पंडित जी, कै बात है? आप बार-बार क्या गिन रहे हैं? पंडितजी बोले, क्या बताएँ नन्दबाबा जी, केवल आज का ही मुहूर्त निकल रहा है, इसके बाद तो एक वर्ष तक कोई मुहूर्त है ही नहीं.. पंडित जी की बात सुनकर नन्दबाबा ने श्रीकृष्ण को गो-चारण की स्वीकृति दे दी.

भगवान जिस समय जो कोई कार्य करे, वही समय शुभ मुहूर्त बन जाता है. उसी दिन भगवान ने गो-चारण आरम्भ किया और वह शुभ तिथि थी कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी, भगवान के गो-चारण पर जाने के कारण यह तिथि गोपाष्टमी कहलाई.

गोपूजन : गोपाष्टमी के अवसर पर गऊशालाओं व गो पालकों के यहाँ जाकर गायों की पूजा अर्चना की जाती है इसके लिए दीपक, गुड़, केला, फूलमाला, गंगाजल इत्यादि वस्तुओं से इनकी पूजा करने का विधान है. महिलाएँ गऊओं से पहले श्रीकृष्ण की पूजा कर गोमाता का तिलक करती हैं. गायों को हरा चारा, गुड़ इत्यादि खिलाया जाता है तथा सुख-समृद्धि की कामना की जाती है. कई स्थानों पर गोपाष्टमी के अवसर पर गायों की उपस्थिति में प्रभातफेरी सत्संग सम्पन्न होते हैं.

गो-पूजन के समय बोला जाने वाला मन्त्र-

ॐ गोविन्दाय नमः ।।

किवदंती है कि धन प्राप्ति के लिए गाय के चरणों में चढ़े ८ कागजी बादाम अपनी तिजोरी में छुपाकर रखने से लाभ होता है.

पारिवारिक सुख-समृद्धि के लिए दंपति किसी काली गाय को भिगोई हुई उड़द खिलावें.

घर-परिवार में लक्ष्मी वास हेतु गोपाष्टमी से ४३ दिन तक लगातार गाय के उपले की धूनी करें.

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

भगवान के कृतघ्न नहीं बनें। उनकी कृपा के लिए बार-बार उनके आभार मानें। उन्होंने आपको जो कुछ भी दिया है उस पर प्रसन्नचित्त होकर रहें।

गौमाता की कृपा से राजा दिलीप का मनोरथ हुआ पूर्ण

गोपाष्टमी विशेष

गौमाता मातृशक्ति की साक्षात् प्रतिमा है. जिस दिन विश्व में गाय नहीं रहेगी, उस दिन विश्व मातृशक्ति से वंचित हो जायेगा.

लोकान् सिसृक्षुणा पूर्णा गावः सृष्टाः स्वयंभू वा।
वृत्यर्थं सर्वभूतानां तस्मात् ता मातरः स्मृता।।

तभी तो कहा गया है-

गावो में अग्रतः संतु गावो में सन्तु पार्श्वतः।
गावो में हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाभ्यहम्।।

महाराज दिलीप इक्ष्वाकुवंश के प्रसिद्ध राजर्षि के साथ-साथ बड़े धर्मात्मा और प्रजापालक थे. सभी प्रकार के सुख साधन के बावजूद वे निःसंतान थे. इसी वजह एक समय के बाद उन्होंने अपने कुलगुरु महर्षि वशिष्ठ के पास जाकर उपाय पूछा.

महर्षि वशिष्ठ तो दिव्यदृष्टि से जानने वाले थे.

उन्होंने कहा-राजन्, जब आप देवासुर-संग्राम से लौट रहे थे तो रास्ते में आपको एक सुरनन्दिनी कामधेनु मिली. आपकी दृष्टि उन पर नहीं पड़ी और सामने होते हुए भी आपने उन्हें प्रणाम नहीं किया. कामधेनु ने इसे अपना अपमान समझा और आपको संतानहीन होने का शाप दे दिया, लेकिन उस वक्त आकाशगंगा के तीव्र स्वर होने की वजह से आपने उस शाप को नहीं सुना. अब तो एक ही समाधान है कि आप उनको कैसे भी करके प्रसन्न करें. वह तो यहां नहीं है, पर उनकी बछिया है, आप उसकी सेवा करके अपना मनोरथ पूरा करें. भगवान ने चाहा तो जरूर आपको संतान मिलेगी. गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर महाराज अपनी महारानी सहित गोसेवा में लग गये. ब्रह्ममुहूर्त में उठकर बछिया को दूध पिलाते, ऋषि के हवन के लिए दूध दुहते फिर गौ की बछिया को लेकर जंगल में चले जाते थे. गौ जिधर-जिधर जाती थी वे पीछे-पीछे जाते. जहां बैठकर हरी-हरी घास खाती तो उसके पास बैठकर बड़े प्यार से उसके पूरे शरीर को दुलारते-सहलाते. दूब उखाड़कर खिलाते. इस प्रकार महाराज के २१ दिन पूरे हो गये. एक दिन गौ के पीछे-पीछे जंगल में गये तो वह घने वन में घुस गयी. महाराज ने भी धनुष से घनी लताओं को हटाते हुए प्रवेश किया तो देखा कि गौ के ऊपर सिंह चढ़ गया है और उसको मार डालना चाहता है तो महाराज ने बाण निकालकर सिंह को मारना चाहा इस पर उनके हाथ जड़वत हो गये. अब वे क्या करें?.....उन्होंने अत्यंत दीनता पूर्वक सिंह से कहा- 'आप कोई सामान्य सिंह नहीं हैं. जरूर कोई देवता हैं. आप इस गौ के बदले मुझे लेकर खा लीजिये या आप जो भी आज्ञा देंगे मैं करूंगा.'

सिंह ने गर्जते हुए कहा- 'यह वृक्ष भगवती पार्वती जी को अत्यंत प्रिय है. मुझे शिवजी ने स्वयं अपनी इच्छा से उत्पन्न करके इसकी रक्षा के लिये नियुक्त किया है. ये वृक्ष के नीचे खड़ी थी. अतः यहां जो भी आता है. वह मेरा आहार बन जाता है. अब इस गौ को मैं खाऊंगा.'

महाराज बोले- 'सिंहराज! ऐसा हरगिज न करें. यह गौ मेरे गुरुदेव की है. इसके बदले मैं अपने आपको आपके भक्षण के लिये सौंप रहा हूं. मुझे खाकर आप अपना पेट भरें पर इसे छोड़ दें.' सिंह ने बहुत समझाया कि महाराज, आप तो राजा हैं, प्रजा के प्राणरक्षक हैं. गुरु को तो ऐसी लाखों गौएं देकर आप संतुष्ट कर सकते हैं, किंतु महाराज नहीं माने. अंत में सिंह तैयार हो गया और गौ के ऊपर से उतर गया, तब महाराज जमीन पर गिर पड़े. थोड़ी देर बाद देखा कि न तो वहां सिंह है न कोई वृक्ष.....केवल कामधेनु ही खड़ी है. उन्होंने कहा- 'राजन्, मैं आप पर बहुत प्रसन्न हूं. यह सब मेरी ही माया थी. आप मेरा दूध दुहकर पी लें, आपके गृह में पुत्र अवश्य होगा.'

महाराज बहुत खुश हो गये और निवेदन किया- 'देवि, आपकी आज्ञा व आशीर्वाद मुझे शिरोधार्य है, लेकिन जब तक आपका बछड़ा दूध न पी ले, गुरु के यज्ञ के लिये दूध न दुह लूं और गुरु जी की आज्ञा नहीं मिलेगी, तब तक मैं दूध नहीं पी सकता. यह सुनकर गौ माता बहुत संतुष्ट हुई. गौ संध्या को महाराज के आगे आगे चलकर महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में गयीं. सर्वज्ञानी तो पहले ही जान चुके थे. महाराज ने सब वृत्तांत कहा तो, प्रसन्न होकर बोल उठे-'राजन्! आपका मनोरथ पूर्ण हुआ. गौ की कृपा से आपके यहां बड़ा प्रतापी पुत्र होगा. आपका वंश उसी के नाम से जाना जायेगा.' नियत समय पर ऋषि ने नन्दिनी का दूध राजा और रानी को दिया. वे राजमहल पधार गये. रानी गर्भवती हुई. यथा समय उनके यहां पुत्ररत्न हुआ. यही बालक रघुकुल का जन्मदाता, प्रतिष्ठाता 'रघु' नाम से प्रसिद्ध हुआ. महाराज दिलीप भगवान श्रीरामचन्द्र के प्रपितामह थे. इस प्रकार गौरक्षक महाराज दिलीप ने संतान प्राप्त की.

संकलित

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

गलत तरीके से पैसा कमाना या दूसरों को दुःख देकर पैसा कमाना- ये भी एक तरह की हिंसा है।

देवउठनी एकादशी का महात्म्य एवं कथा

धार्मिक मान्यता के अनुसार देवउठनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु नींद से जागते हैं। इसी दिन से शुभ कार्यों की शुरुआत भी होती है। देवउठनी एकादशी से जुड़ी कई परम्परायें हैं।

ऐसी ही एक परंपरा है तुलसी-शालिग्राम विवाह की। शालिग्राम को भगवान विष्णु का ही एक स्वरुप माना जाता है। तुलसी शालिग्राम का विवाह क्यों होता है इसकी शिव पुराण एक कथा है जो इस प्रकार है।

तुलसी शालिग्राम विवाह कथा

शिवमहापुराण के अनुसार पुरातन समय में दैत्यों का राजा दंभ था। वह विष्णुभक्त था। बहुत समय तक जब उसके यहां पुत्र नहीं हुआ तो उसने दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य को गुरु बनाकर उनसे श्रीकृष्ण मंत्र प्राप्त किया और पुष्कर में जाकर घोर तप किया। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उसे पुत्र होने का वरदान दिया।

भगवान विष्णु के वरदान स्वरूप दंभ के यहां पुत्र का जन्म हुआ। (वास्तव में वह श्रीकृष्ण के पार्षदों का अग्रणी सुदामा नामक गोप था, जिसे राधाजी ने असुर योनी में जन्म लेने का श्राप दे दिया था) इसका नाम शंखचूड़ रखा गया। जब शंखचूड़ बड़ा हुआ तो उसने पुष्कर में जाकर ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या की।

शंखचूड़ की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी प्रकट हुए और वर मांगने के लिए कहा। तब शंखचूड़ ने वरदान मांगा कि मैं देवताओं के लिए अजेय हो जाऊं। ब्रह्माजी ने उसे वरदान दे दिया और कहा कि तुम बदरीवन जाओ। वहां धर्मध्वज की पुत्री तुलसी तपस्या कर रही है, तुम उसके साथ विवाह कर लो।

ब्रह्माजी के कहने पर शंखचूड़ बदरीवन गया। वहां तपस्या कर रही तुलसी को देखकर वह भी आकर्षित हो गया। तब भगवान ब्रह्मा वहां आए और उन्होंने शंखचूड़ को गांधर्व विधि से तुलसी से विवाह करने के लिए कहा। शंखचूड़ ने ऐसा ही किया। इस प्रकार शंखचूड़ व तुलसी सुख पूर्वक विहार करने लगे।

शंखचूड़ बहुत वीर था। उसे वरदान था कि देवता भी उसे हरा नहीं पाएंगे। उसने अपने बल से देवताओं, असुरों, दानवों, राक्षसों, गंधर्वों, नागों, किन्नरों, मनुष्यों तथा त्रिलोकी के सभी प्राणियों पर विजय प्राप्त कर ली। उसके राज्य में सभी सुखी थे। वह सदैव भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन रहता था।

स्वर्ग के हाथ से निकल जाने पर देवता ब्रह्माजी के पास गए और ब्रह्माजी उन्हें लेकर भगवान विष्णु के पास गए। देवताओं की बात सुनकर भगवान विष्णु ने बोला कि शंखचूड़ की मृत्यु भगवान शिव के त्रिशूल से निर्धारित है। यह जानकर सभी देवता भगवान शिव के पास आए।

देवताओं की बात सुनकर भगवान शिव ने चित्ररथ नामक गण को अपना दूत बनाकर शंखचूड़ के पास भेजा। चित्ररथ ने शंखचूड़ को समझाया कि वह देवताओं को उनका राज्य लौटा दे, लेकिन शंखचूड़ ने कहा कि महादेव के साथ युद्ध किए बिना मैं देवताओं को राज्य नहीं लौटाऊंगा।

भगवान शिव को जब यह बात पता चली तो वे युद्ध के लिए अपनी सेना लेकर निकल पड़े। शंखचूड़ भी युद्ध के लिए तैयार होकर रणभूमि में आ गया। देखते ही देखते देवता व दानवों में घमासान युद्ध होने लगा। वरदान के कारण शंखचूड़ को देवता हरा नहीं पा रहे थे।

शंखचूड़ और देवताओं का युद्ध सैकड़ों सालों तक चलता रहा। अंत में भगवान शिव ने शंखचूड़ का वध करने के लिए जैसे ही अपना त्रिशूल उठाया, तभी आकाशवाणी हुई कि जब तक शंखचूड़ के हाथ में श्रीहरि का कवच है और इसकी पत्नी का सतीत्व अखंडित है, तब तक इसका वध संभव नहीं होगा।

आकाशवाणी सुनकर भगवान विष्णु वृद्ध ब्राह्मण का रूप धारण कर शंखचूड़ के पास गए और उससे श्रीहरि कवच दान में मांग लिया। शंखचूड़ ने वह कवच बिना किसी संकोच के दान कर दिया। इसके बाद भगवान विष्णु शंखचूड़ का रूप बनाकर तुलसी के पास गए।

वहां जाकर शंखचूड़ रूपी भगवान विष्णु ने तुलसी

के महल के द्वार पर जाकर अपनी विजय होने की सूचना दी। यह सुनकर तुलसी बहुत प्रसन्न हुई और पति रूप में आए भगवान का पूजन किया व रमण किया। तुलसी का सतीत्व भंग होते ही भगवान शिव ने युद्ध में अपने त्रिशूल से शंखचूड़ का वध कर दिया।

कुछ समय बाद तुलसी को ज्ञात हुआ कि यह मेरे स्वामी नहीं है, तब भगवान अपने मूल स्वरूप में आ गए। अपने साथ छल हुआ जानकर शंखचूड़ की पत्नी रोने लगी। उसने कहा आज आपने छलपूर्वक मेरा धर्म नष्ट किया है और मेरे स्वामी को मार डाला। आप अवश्य ही पाषाण हृदय हैं, अतः आप मेरे श्राप से अब पाषाण(पत्थर) होकर पृथ्वी पर रहें।

तब भगवान विष्णु ने कहा देवी, तुम मेरे लिए भारत वर्ष में रहकर बहुत दिनों तक तपस्या कर चुकी हो। अब तुम इस शरीर का त्याग करके दिव्य देह धारणकर मेरे साथ आन्नद से रहो। तुम्हारा यह शरीर नदी रूप में बदलकर गंडकी नामक नदी के रूप में प्रसिद्ध होगा। तुम पुष्पों में श्रेष्ठ तुलसी का वृक्ष बन जाओगी और सदा मेरे साथ रहोगी।

तुम्हारे श्राप को सत्य करने के लिए मैं पाषाण (शालिग्राम) बनकर रहूँगा। गंडकी नदी के तट पर मेरा वास होगा। नदी में रहने वाले करोड़ों कीड़े अपने तीखे दांतों से काट-काटकर उस पाषाण में मेरे चक्र का चिह्न बनाएंगे। धर्मालुजन तुलसी के पौधे व शालिग्राम शिला का विवाह कर पुण्य अर्जन करेंगे।

नेपाल स्तिथ गण्डकी नदी, केवल इस नदी में ही मिलते है शालिग्राम परंपरा अनुसार देवप्रबोधिनी एकादशी के दिन भगवान शालिग्राम व तुलसी का विवाह संपन्न कर मांगलिक कार्यों का प्रारंभ किया जाता है। मान्यता है कि तुलसी-शालिग्राम विवाह करवाने से मनुष्य को अतुल्य पुण्य की प्राप्ति होती है। संकलित

समर्पण

एक बार नारद जी ने द्वारकाधीश से पूछा- 'प्रभु! क्या कारण है की सर्वत्र संसार में राधे-राधे हो रहा है। आपकी महापटरानी 'रुकमणी' और अन्य रानियों को तो ब्रज तक में कोई याद नहीं करता।'कृष्ण यह सुनकर नारद के सामने ही पलंग पर धड़ाम से गिर गए। घबराए हुए नारद ने पूछा- क्या हुआ प्रभु ! तब श्री कृष्ण ने कहा- नारद मेरे सिर में बहुत तेज दर्द हो रहा है,तुम कुछ करो। नारद को आश्चर्य हुआ। वे बोले- कि आप त्रिलोकीनाथ हो, आप ही बताओ मैं क्या कर सकता हूं?

कृष्ण बोले -'मेरे किसी सच्चे भक्त के पास जाकर, उसके चरणों की रज लेकर आओ, उसे मेरे मस्तक पर लेप करूंगा, तो दर्द ठीक हो जाएगा।' नारद जी असमंजस में वहां से दौड़े और सबसे पहले रुक्मणी के पास जाकर, उन्हें अपने चरणों की धूलि देने को कहा। रुक्मणी ने अपने पांव पीछे खींच लिए। वे बोली कि, 'यह आप क्या कर रहे हो ? कृष्ण मेरे पति हैं, मेरे चरणों की रज यदि उनके माथे पर लगी, तो मुझे नर्क में जाना पड़ेगा!' यही जवाब अन्य रानियों ने भी दिया।

नारद निराश हो गए और तुरंत मन की गति से राधा जी के पास पहुंच कर, उन्हें सारी बात बतलाई। राधा अत्यंत व्याकुल हो गई और नारद से पूछा -मेरे प्रभु को सर में दर्द हुए कितनी देर हो गई ? नारद ने बतलाया कि, यही कोई दो घंटे हुआ है। इस पर राधा नारद जी पर नाराज हो गई। उन्होंने कहा- 'मेरे प्रियतम को दो घंटे से जो वेदना हो रही है, उसके लिए आप ही जिम्मेवार हो। आप मेरे चरणों की रज लेने तुरंत ही क्यों नहीं आए। अभी जितनी ले जाना हो, ले जाओ। उसके बदले में मुझे, एक बार तो क्या, हजार बार भी नरक जाना पड़े,तो स्वीकार है।'राधा की चरण रज लेकर नारद कृष्ण के पास पहुंचे । कृष्ण ने उस रज का अपने मस्तक पर लेप किया और सिर दर्द ठीक हो गया।

कृष्णजी ने नारद से पूछा- 'कुछ समझ में आया कि, सर्वत्र राधे-राधे क्यों हो रहा है?' नारद बोले कि, हां समझ में आ गया प्रभु! 'और यह भी समझ में आया कि, आप जिससे प्रेम करते हो, उसे एक क्षण भी तकलीफ में नहीं देख सकते। चाहे उसके बदले में आपको कैसा भी त्याग क्यों ना करना पड़े।'

यही सच्चा प्रेम है। समर्पण लेने की बात नहीं सोचता, केवल देने की सोचता है,केवल देने की। संकलित

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

उदारता का गुण मन पर है, धन पर नहीं,
बड़प्पन का गुण बुद्धि पर है, आयु पर नहीं।

तुलसी जी की अनन्त महिमा

।। ॐ श्री सतनाम साक्षी ।।

महाप्रसाद जननि, सर्व सौभाग्य वर्धिनी !
आदि व्याधि हरा नित्यं, तुलसी त्वम नमोस्तुते !!

तुलसी जी को केवल एक सामान्य पौधा नहीं समझना चाहिए ! वह तो मोक्षदायिनी है ! तुलसी दल, पत्र व तुलसी की माला परमपद देने वाले है !

वृन्दावन की गोपियाँ कहती है कि तुलसी जी तो कल्याण करने वाली हैं और श्री गोविंद जी के श्री चरणों की प्रिया हैं ! जीव का कल्याण करने की सामर्थ्य यदि किसी में है तो वो तुलसी जी में हैं ! जब तक तुलसी को धारण नहीं करते हैं ! तब तक जीव का कल्याण होने वाला नहीं हैं !

कितने भी सोने-चाँदी पहन ले ! सबसे दुर्लभ कोहिनूर का पूरा हार भी क्यों ना पहन लें ! लेकिन कल्याण होने वाला नहीं हैं और अगर मरते समय तुलसी का एक दाना या तुलसी दल भी अगर मुँह में हैं तो पक्की गारन्टी हैं कि वह जीव नर्क में नहीं जाएँगा ! इतनी महिमा हैं- तुलसी जी की !

स्कंद पुराण में लिखा है कि- जिसके कंठ में तुलसी नहीं है वो मूढ़ मनुष्य हैं उनके द्वारा छुआ हुआ जल भी मद्य के तुल्य है !

पुराने संत-महापुरुष तो जिसके कंठ में तुलसी नहीं होती थी ! उसके छुए जल से स्नान तक नहीं करते थे ! स्नान के समय भी तुलसी की बड़ी महिमा हैं ! स्नान के समय तुलसी का एक दाना भी किसी के शरीर पर हैं ! तुलसी को छूकर जब जल शरीर पर पड़ता है तो सारी धरती के तीर्थों में स्नान का फल मिलता हैं ! तुलसी कंठ में हो और भोजन करें तो भी एक-एक अन्न के कण पर अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है ! तुलसी की कंठी पहन कर, केवल भोजन करने पर इतना फल मिलता हैं और लोग तुलसी नहीं पहनते ! बहुत सारी माताओं की भी यही सोच हैं कि- सौभाग्यवती स्त्री न हो तो भले व्रज रज लगाए तुलसी पहने ! लेकिन सौभाग्यवती स्त्री को तुलसी जी की माला नहीं पहननी चाहिए ! यह गलत सोच हैं ! यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि तुलसी पहनने वाले का खान-पान शुद्ध होना चाहिए ! जो वस्तु भगवान को भोग नहीं लग सकती है ! वह वस्तु को तुलसी पहनने वालों को नहीं खाना चाहिए ! भगवान को भोग भी तभी स्वीकार होता है ! जब तुलसी दल भोग में होता है ! अतः तुलसी दल भगवान के भोग में जरूर रखना चाहिए !

उसी प्रकार जब जीव तुलसी माला धारण करता है तो भगवान भी उसे अंगीकार कर लेते हैं ! उसके दोष को नहीं देखते हैं ! इसलिए प्रत्येक जीव को तुलसी अवश्य धारण करनी चाहिए !

भक्त रसखान जी को कौन नहीं जानता ? वह मुसलमान थे पर भगवान श्रीकृष्ण के परम भक्त थे ! वह एक तुलसी का दाना नहीं बल्कि एक बोझा तुलसी पहनते थे ! सैकड़ों तुलसी की माला पहनते थे ! छोटी-बड़ी हर प्रकार की तुलसी माला पहनते थे ! एक बार वृन्दावन के संतों ने रसखान जी से पूछा कि- वैष्णव भी कोई एक, कोई दो, कोई चार-पांच माला पहनता है ! लेकिन आपने तो सैकड़ो माला पहनी है ! ऐसा क्यों.. ?

तब उन्होंने जवाब दिया - तुलसी सामान्य लकड़ी नहीं है - महाराज ! ये तो परब्रह्म का स्वरूप हैं ! साधारण लकड़ी के सहारे लोग बड़े-बड़े समुद्र पार कर लेते हैं तो तुलसी की लकड़ी तो ब्रह्म स्वरूपा है !

तुलसी जी की भी इतनी सामर्थ्य हैं कि- यह जीव को भवसागर से पार कर देती हैं ! आप सब तो पवित्र सनातन धर्म को मानने वाले के परिवारों में पैदा हुए हैं ! आप से कोई पाप बना ही नहीं और साधु होके

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी मन में किसी वस्तु की चाह रखना ही दरिद्रता है।

वृन्दावन में वास कर रहे हैं ! आप तो एक-दो माला से भी पार हो जाएंगे ! लेकिन मैंने तो ऐसे कुल में जन्म लिया ! जहाँ ये समझने में ही देर हो गई ! पाप किसको कहते हैं...? हमारे पास ओर कोई साधन तो नहीं है ! इसलिए हम तुलसी के सहारे भवसागर से पार उतर जाएँगे ! एक मुसलमान भक्त की तुलसी माला जी में इतनी निष्ठा हो सकती हैं तो हमारी कितनी होनी चाहिए..? आप स्वयं विचार करो..?'

श्री गोपीनाथ जी महाराज (मंदिर) जो जयपुर में विराजमान हैं ! श्री मधु गोस्वामी जी ने उनकों प्रकट किया ! श्री मधु पंडित जी का वस्त्र श्री गोपीनाथ जी जयपुर में दर्शनार्थ रखा हैं ! जो तुलसी से बना हैं ! तुलसी की टोपी, तुलसी के दानों से ही पूरा वस्त्र बना हैं ! उनका इतना तुलसी जी से प्रेम था कि सब कुछ तुलसी जी का ही है ! इसलिए जितना हो सके तुलसी जी की माला अवश्य धारण करनी चाहिए ! जिससे हमारा कल्याण होगा और हमें मोक्ष पद की प्राप्ति होगी !

।।ॐ श्री सतनाम साक्षी ।।

पवित्र कार्तिक मास

बुधवार 8 अक्टूबर से बुधवार 5 नवम्बर 2025

पवित्र कार्तिक मास महिमा

न कार्तिकसमो मासो, न कृतेन समं युगम् !
न वेद सदृशं शास्त्रं, न तीर्थं गंगया समम् !!

कलयुग में कार्तिक के समान कोई दूसरा मास नहीं !
सतयुग के समान युग नहीं !
वेदों के समान कोई शास्त्र नहीं !
और श्री गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं हैं !

इस पूरे पवित्र कार्तिक मास में करें ये पुण्य शुभ कर्म...

१. प्रतिदिन गंगा जल स्नान... २. सुबह जल्दी उठकर नाम जप...
३. हरि नाम संकीर्तन... ४. दान पुण्य, आंवला एवं तुलसी पूजन अथवा दीपदान...
५. गौमाता की सेवा एवं घास, गुड़, फल आदि सेवा...
६. भगवान के 'श्री मंदिर' का प्रतिदिन दर्शन व आरती...
७. प्रतिदिन सत्संग 'कार्तिक कथा' श्रवण करना...

श्री अमरापुर स्थान जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जब हम अपना मन और बुद्धि दोनों ही गुरु को अर्पित करेंगे तब ही हमें गुरु का सच्चा आशीर्वाद मिलेगा।

श्री गुरु नानकदेव एवं उनका संदेश

05 नवम्बर, गुरुनानक जयंती विशेष

(डॉ॰ दयाल 'आशा')

भाग्यशाली भारतभूमि ऋषियों मुनियों अवतारों की पावन भूमि है, जिन्होंने अपने ज्ञान, भक्ति व कर्म के प्रकाश द्वारा न केवल भारत अपितु विश्व को अपनी आभा से आलोकित किया. ०५ नवम्बर एक ऐसे महापुरुष का जन्म-दिवस है, जिन्होंने संसारको सत्य, स्नेह, स्मरण, सेवा, सादगी, साम्यवाद का संदेश दिया. उनका जन्म विक्रम संवत् १५२६ में पंजाब के तिलवंडी गाँव में श्री कालूराम के घर में हुआ. तिलवंडी गाँव अब ननकाणा साहिब के नाम से प्रसिद्ध है.

श्री गुरु नानकदेव का जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है. उनके सिद्धाँत एवं शिक्षाएँ आज भी मानव मात्र का मार्गदर्शन करती हैं. घर-गृहस्थ में रहकर उनकी आसक्ति सांसारिक पदार्थों में नहीं रही. श्री श्रीचन्द एवं श्री लखमीचंद उनके दो तेजस्वी पुत्र थे, फिर भी उन्होंने अपनी गद्दी का उत्तराधिकारी अपने योग्य सेवक भाई लहणो को बनाया, जिसका बाद में नाम श्री अंगद रखा गया, जो गुरु अंगददेव महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए. श्री गुरु नानकदेव जी की यह महानता थी कि उन्होंने मोह वश न होकर योग्य पुरुष को अपना उत्तराधिकारी बनाया.

श्री गुरु नानकदेव सांसारिक व्यवहार करते हुए भी नाम का स्मरण करते थे.

नाम खुमारी नानका-चढ़ी रहे दिन रात।

वे अवतारी पुरुष थे, फिर भी उनके मन में नाम की कितनी न प्यास थी. वे अपनी वाणी में कहते हैं-

आखा जीवा विसरै मरि जाउ। आखणि अउखा साचा नाउ।।
साचे नाम की लागै भूख, उतु भूखै खाइ, चलीअहि दूख
सो किउ विसरै मेरी माइ।।

वे दीन दुखियों की सेवा भी करते थे. जब वे मोदी खाना चलाते थे, तब वे संतों एवं गरीबों में अनाज एवं वस्त्र बाँटते थे. वे न केवल मानव मात्र को प्यार करते थे, परन्तु पशु पक्षियों को भी प्यार करते थे. एक बार उनके पिताश्री ने उन्हें खेत की देखभाल के लिए खेत में भेजा, तब वहाँ भी वे भगवद् भजन में लीन रहते और खेत में बैठे पक्षियों को उड़ाते नहीं थे, किन्तु उन्हें कहते थे-

राम दी चिड़ियाँ राम दा खेत। खा लो चिड़ियाँ भर भर पेट।।

श्री गुरु नानकदेव जी राष्ट्रीय एकता के प्रतीक थे, जब वे भ्रमण एवं सत्संग करते थे तो अधिकतर उनकी एक ओर भाई मरदानो मुस्लमान एवं दूसरी ओर भाई बालो हिन्दू शिष्य साज़ बजाते थे. उनकी वाणी से भी मानव एकता की झलक मिलती है-

ख़ालिक वसै ख़लिक में ख़लिक वसै रब मांहि।
मंदा किसे नू आखियो, ना जिस बिन कोई नांहि।।

श्री गुरु नानकदेव के मन में धार्मिक संकीर्णता नहीं थी. वे तो सारे विश्व के आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे. उन्होंने पतितों में भी प्रभु का दर्शन किया. उन्होंने सभी सम्प्रदायों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया. उन्होंने न सिर्फ भारत परन्तु नेपाल, तिब्बत, चीन, ईरान, बग़दाद, कंधार, मक्का, अरब देशों का भ्रमण कर अज्ञानी लोगों को ज्ञान व भक्ति का संदेश देकर सत्मार्ग में लगाया.

वे धनवानों से अधिक दीनों को, गरीबों को अधिक प्यार करते थे. एक बार धनवान मलक भागू ने उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया, किन्तु उन्होंने उसका निमंत्रण स्वीकार न कर एक गरीब लालू बढ़ई का निमंत्रण स्वीकार किया. जब मलक भागू को यह पता चला तब वह श्री गुरु नानकदेव के पास आया और उनसे प्रश्न किया कि उन्होंने बढ़ई का निमंत्रण स्वीकार किया और उसका क्यों नहीं? श्री गुरु नानकदेव ने लालू बढ़ई एवं धनवान मलक भागू से कहा कि वे अपना-अपना भोजन लायें. जब दोनों ओर से भोजन आया तब श्री श्री गुरु नानकदेव ने एक हाथ में धनवान मलक भागू का मालपुआ और दूसरे हाथ में लालू बढ़ई की बाजरे की रोटी लेकर दबोची. तब धनी के मालपुए से रक्त की बूँदें टपकने लगीं और ग़रीब बढ़ई की रोटी से दूध की धार बहने

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जिन महापुरूषों की वाणी वेद के समान है, उनकी सेवा करनी चाहिए। जब वे महात्मा सेवा करने पर प्रसन्न हो जाते हैं तब जिज्ञासु को आत्मज्ञान देकर अमर बनाते हैं।

लगी. यह देखकर धनवान मलक भागू आश्चर्य में पड़ गया. श्री गुरु नानकदेव ने धनी व्यक्ति से कहा कि तुम्हारा स्वादिष्ट भोजन पाप की कमाई से बना हुआ है, इसलिए इससे रक्त टपक रहा है और बढ़ई की रोटी ईमानदार परिश्रम की कमाई से बनी है, इसलिए उसमें दूध की धारा बहने लगी. मुझे शुभ कमाई की रोटी स्वीकार है. परिश्रम से कमाया धन सच्चा धन है. तुम्हारी कमाई पाप की कमाई है.

श्री गुरु नानकदेव के प्रेरणादायी जीवन की अनोखी घटनाओं एवं काव्य से प्रतिभासित होता है कि वे सच्चे साम्यवादी थे. मार्क्स तो बाद में पैदा हुए. श्री गुरु नानकदेव ने प्रेम द्वारा हार्दिक परिवर्तन लाया. श्री गुरु नानकदेव ने करतारपुर में लंगर का आरम्भ किया. वहाँ सभी लोगों को बिना मूल्य बिना किसी भेदभाव के भोजन खिलाया जाता था.

मक्का मदीना में श्री गुरु नानकदेव के चमत्कार देखकर मौलवी अत्यन्त प्रभावित हुए. वहाँ उन्होंने उपदेश दिया कि भगवान व अल्लाह में कोई अन्तर नहीं. हम सब एक ही ब्रह्म की सन्तान हैं.

श्री गुरु नानकदेव महान संत कवि एवं दार्शनिक भी थे. वे निर्गुण उपासक थे. उन्होंने 'श्री जप जी साहब' में निर्गुण ब्रह्म की व्याख्या की है. वे अद्वैत सिद्धाँत का समर्थन करते हुए कहते हैं-

अन्तर बाहर एको जानिया नानक अंतर न दूजा।

वे सब जीवों में एक ब्रह्म का साक्षात्कार करते हुए कहते हैं-

ओअंकार सर्वप्रकाशी आतम सिद्ध अकिरइ अविनाशी,
ईश जीव में भेद न जानो, साध चोर सभ ब्रह्म पछानो।

संत कबीर की भाँति श्री गुरु नानकदेव ने भी अपने काव्य में गुरु की महत्ता प्रतिपादित की है. उनके विचारानुसार गुरु के मन्त्र बिना मुक्ति सम्भव नहीं.

'बिन गुर सब्द मुक्ति नहीं कबहीं अंधले धुन्ध पसारा'

गुरु द्वारा जब जीव को ज्ञान की प्राप्ति होती है, तब वह आवागमन से मुक्त होता है. श्री गुरु नानकदेव गुरु की महिमा गाते हुए कहते हैं-

गुरु की साखी अमृत वाणी पीवत ही परवाणु भइया।

गुरु की कृपा से सूखी लकड़ियाँ भी हरी हो जाती है. श्री गुरु नानकदेव भी कहते हैं-

'गुरु प्रसाद परम पद पाया, सूके कासट हरिया।'

श्री गुरु नानकदेव मानव जीवन का महत्त्व बताते हुए कहते हैं कि यदि मनुष्य प्रभु से मिलना चाहता है तो इस मानुष योनि में ही वह सम्भव है. इसके लिये संतों का संग कर नाम स्मरण करना चाहिए.

भई प्राप्त मानुख देहुरिया, गोबिन्द मिलण की इह तेरी बरिआ।
अवरि काज तेरे किते न काम, मिल साध संग भज केवल नाम।

श्री गुरु नानकदेव जी युग दृष्टा एवं युगसृष्टा थे. वे अपनी वाणी में कलियुग का चित्र प्रस्तुत करते हुए कहते हैं-

कलि काती राजे कासाई, धर्म पंख कर उडरिया।
कूड़ अमावस सचु चन्द्रमा दीसै नाहीं कह चढ़िआ।

०५ नवम्बर श्री गुरु नानकदेव का जन्मदिन सारे विश्व में मनाया जाएगा. आज चारों ओर आंतक अशान्ति का वातावरण है, राष्ट्रीय एकता की बातें की जा रही हैं. ऐसे दूषित वातावरण में श्री गुरु नानकदेव के विचारों एवं सिद्धाँतों को अपनाने की आज अधिक जरूरत है.

मोर पँख

मोर पँख एक प्रकार से देखा जाय तो मोर कि अस्थि है और कर्मकाण्ड की दृष्टि से अगर उसको छू ले तो कहेंगे मिट्टी से कम से कम ग्यारह बारह बार हाथ धोओ। और मजे की बात ये है कि मोर भी उसे त्याग देता है छोड़ देता है। पर जब वो छूट करके भी श्रीठाकुरजी के काम आता है तो मोर के पीछे की चीज गोविन्द अपने सिर पर धारण करते हैं तो दुनिया का त्यागा हुआ व्यक्ति भी अगर परमात्मा के चरणों में चला जाय तो भगवान कहते हैं दुनिया के पैरों में पड़े रहने वाले व्यक्ति को भी मैं अपने माथे पर धारण करता हूँ।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश संसार भी एक भूल भुलैया है। इसमें सत्त्व, रज और तम इन गुणों से उत्पन्न होने वाली वृत्तियाँ, जो बहुत घुमाव-फिराव वाली गलियाँ हैं।

कार्तिक मास भजन आनन्द

महिनो कतीअ जो आयो आयो

थलु : महिनो कतीअ जो आयो आयो,
जागण जो कयो सायो, मैं वारी जावां...

1. दरिब्रारियुनि जा खुल्या दुआरा,
हिक बिए खे सदु करनि प्यारा,
जागो देरि न लायो, मैं वारी जावां...

2. घिंड घड़ियाला, तुरियूं तूतारा,
जागाइण लाइ वजनि नग़ारा,
जागी रामु रीझायो, मैं वारी जावां...

3. पाण भी जागो बियनि जगायो,
कथा बुधण में सुरिति लगायो,
निंड जो भूतु भजायो, मैं वारी जावां...

4. व्रत कतीअ जा रखो रखायो,
दया, धर्म, पुञु कयो करायो,
दर्शनु गुर जो पायो, मैं वारी जावां...

5. कहे टेऊँ कम कूड़ा छडियो,
गुर गोबिन्द सां मन खे गडियो,
सफलो जनमु बणायो, मैं वारी जावां...

ज्योति ज्ञान जी बारि, गुरमुख

।। राग जोगु भजनु ।।

ज्योति ज्ञान जी बारि, गुरमुख,
हरिदमु पंहिंजे मन मंदिर में ।। टेक ।।

डीओ प्रेम सचे जो करि तूं, तंहिंमें तेलु तलब जो भरि तूं।
वटि विवेक जी धारि ।।1 ।।

गुर शिक्षा जी तीली लाए, अनभै जी तूं ज्योति जगाए।
भ्रम अंधेरो टारि ।।2 ।।

वस्तु अमोलक हासुलु थींदइ, चोर विकार न वेझो ईंदइ।
निरभै थी त गुज़ारि ।।3 ।।

टेऊँ लगी तूं गुर जे लारे, ज्योति ज्ञान जी वठु तूं बारे।
पाइजि पदु निर्धारु ।। 4 ।।

आयो आयो कारकतु महिनो सुहायो

तर्ज़ : सारी सारी रात तेरी याद .....

थलु : आयो आयो कारकतु महिनो सुहायो।
अमृत वेले जागी हरि खे ध्यायो, जनमु कयो सजायो ।।

1. हिन महिने जी महिमा भारी,
कृष्ण सत्भामा खे उच्चारी।
करे स्नानु धनु दान में हलायो।।

2. गुणवंतीअ हीउ व्रत रखियो आ,
प्रभुअ तंहिंखे पाण परखियो आ।
करे पट राणी कल्प बिरछु लगायो।।

3. हिन महिने में गुरु नानकु जाओ,
कालूअ तृप्ता जो अङणु वसायो।
डियनि वाधायूं सुभ पाठु रखायो।।

4. दास भजन अहिड़ो महिनो मल्हायो,
पाण जागी ऐं बियनि खे जागायो।
करे सत्संग शुभु कर्मु कमायो।।

आई डियारी भागनि वारी

धुन : दो लफ़्ज़ों की है दिल की (द ग्रेट गेम्बलर)

आई डियारी भागनि वारी-
जगमग जगमग कयो चौधारी ।।

1. प्रेम प्यार जी ज्योति जगायो-
रोशनु पंहिंजो अंदरु बणायो।
दूर थिये जींयं ऊंदहि कारी- जगमग ..... ।।

2. खुशि थी खाऊं माल मिठायूं-
पर कुछु ब्यानि खे भी खारायूं।
हुजनि बुखायल जे नर नारी- जगमग ..... ।।

3. आतिशबाजी भली हलायो-
पर न बियनि जो जिगिरु जलायो।
दुखी जीवनि खे डियो दिलिदारी- जगमग ..... ।।

4. करे सफाई सींगारियो-
कढी बियाई अंदरु बुहारियो।
वैर विरोध जी लाहियो बीमारी- जगमग ..... ।।

5. गीत खुशीअ जा गडिजी गायो-
अयुध्या में आहे रामु अजु आयो।
मिली 'मनोहर 'मनायो डियारी- जगमग ..... ।।

-स्वामी मनोहर प्रकाश, श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी सत्संग मुक्ति का द्वार है। इसलिए प्रतिदिन कुछ समय बचाकर सत्संग में जायें।

पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान जयपुर में

कार्तिकोत्सव

गुरुवार 23 अक्टूबर से बुधवार 05 नवम्बर 2025 तक

विशेष पर्व-उत्सव

कार्यक्रम

23 अक्टूबर, गुरुवार	चंद्र दर्शन, भाई दूज, कार्तिक उत्सव प्रारंभ
27 अक्टूबर, सोमवार	साईं टेऊँराम चौथ महोत्सव
30 अक्टूबर, गुरुवार	गोपष्टमी (गो-पूजन)
31 अक्टूबर, शुक्रवार	आँवला नवमी (आँवला पूजन)
02 नवम्बर, रविवार	हरि प्रबोधनी-देवउठनी एकादशी, तुलसी विवाह, भीष्म पंचम
05 नवम्बर, बुधवार	कार्तिक पूर्णिमा, उत्सव समापन, देव दीपावली, गुरुनानक जयंती

प्रतिदिन प्रातः 6 से 7 बजे तक
सद्गुरु टेऊँराम संकीर्तन (प्रभातफेरी)

प्रातः 7 से 8.20 बजे तक
प्रार्थना-सत्संग-कार्तिक कथा

भजन-सत्संग-आरती
सायं 4.30 से 6.20 बजे तक

कार्तिक मेला समापन- 05 नवम्बर 2025

प्रभातफेरी, प्रार्थना, सत्संग, पाठों का भोग साहब, सत्यनारायण कथा, आरती एवं विशाल भण्डारा

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता में

सद्गुरु टेऊँराम गौशाला
मानसरोवर जयपुर में
गोपाष्टमी महोत्सव
गुरुवार, 30 अक्टूबर 2025

विशेष आयोजन

प्रातः 10 से 1 बजे तक सत्संग, प्रवचन,
गौमाता पूजन, आरती एवं विशाल भण्डारा

कार्यक्रम स्थल सद्गुरु टेऊँराम गौशाला

वर्धमान सरोवर, मांग्यावास, गणपतपुरा, मुकुण्ड फार्म हाऊस, हीरापथ, मानसरोवर - जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

दिन का प्रकाश-उजाला देखकर कोई भी बता देता है कि सूर्य का उदय हुआ है, लेकिन सूर्य क्या है ? जिससे हमको इतना लाभ-फायदा मिलता है। यह सब तो शास्त्र पढ़कर उसका चिन्तन मनन करने पर ही मिल सकता है।

परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं पूज्य संत मण्डल की पावन एवं मंगलमयी छत्तीसगढ़ यात्रा

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में पूज्य सन्त मण्डली का आगमन छत्तीसगढ़ प्रदेश में २६ सितम्बर सोमवार को हुआ एवं ११ अक्टूबर शनिवार तक छत्तीसगढ़ के विभिन्न शहरों राजनांदगांव, धमतरी, बालोद, दल्लीराजहरा, बिलासपुर कोरबा, भाटापारा एवं रायपुर में प्रवास किया जिसका लाभ छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा के अनन्य जिज्ञासुओं को प्राप्त हुआ, सद्गुरु महाराज की इस यात्रा का उद्देश्य क्या होता है एवं इससे जिज्ञासुओं को क्या लाभ प्राप्त होता है इस बात की समीक्षा करने के लिए सबसे पहले यह यात्रा कर रही मंडली के बारे में जानना जरूरी है । इस यात्रा का प्रारम्भ सनातन धर्म का प्रचार प्रसार करते हुए मनुष्य के उद्धार के लिए श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने किया था आचार्य श्री का अवतरण ईश्वर के नित अवतार के रूप में मानव कल्याण के लिए ही हुआ था क्योंकि सिंध की पावन धरती पर अज्ञान का तिमिर छाने के कारण ईश्वर को भूलकर लोक पाप के पथ पर चल पड़ा था ईश्वर के प्रति प्रेम पैदा करने एवं प्रेम से ही आपसी सदाचार सेवा सिमरन के साथ परोपकार एवं पुण्य के कार्य सब संभव हो सकते हैं इसलिए आपने जीवों में प्रेम के प्रकाश के लिए श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की स्थापना की । इस मण्डल रूपी बगिया को अनेक संतों ने पुष्पों के दृश्य शामिल हो महका दिया आचार्यश्री जीवन पर्यन्त एवं संत मण्डली ने इस पद्य रचना **''देश विदेश में मण्डली लेकर पावन दे उपदेश आत्म रूप लखाया सबको हरिया ताप क्लेश''** के अनुरूप देश विदेश का भ्रमण करते हुए लोगों में ईश्वर के प्रति प्रेम पैदा कर लोगों में ईश्वर की भक्ति के भाव जागृत किए उन्हें अज्ञान की नींद से जगाया पाप कर्म के दुष्परिणामों को अनेक दृष्टांतो एवं भजनों के माध्यम से लोगों को पाप कर्म से बचाने का सदुपदेश देकर न केवल पुण्य कर्मों को करने के लिए अपितु किए जाने वाले पुण्य कर्मों की संरक्षा करने की भी सरल विधि बताई । सत्नाम साक्षी सिद्ध मंत्र दे कर लोगों को कष्टों दुखों से निवृति का मार्ग बताया । सदुपदेश देकर लोगों के तापों क्लेशों का नाश करने में मदद की एवं शिक्षा दीक्षा देकर जिज्ञासुओं को आत्म साक्षात्कार हेतु प्रेरित किया, आचार्यश्री के १९४२ में ब्रह्मलीन होने पर १९४२ से उनके परम शिष्य तपोमूर्ति सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज के सानिध्य में १९७७ से तृतीय पीठाधीश्वर सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में १९९२ से चतुर्थ पीठाधीश्वर सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के सानिध्य में ये यात्राएं की एवं २००० से आज तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के वर्तमान अध्यक्ष पंचम पीठाधीश्वर के रूप में सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में सन्त मण्डली आचार्यश्री एवं गुरुजनों के द्वारा बनाए आदर्शों सुनीतियों का धारण कर एवं उनके पदचिन्हों पर चलते हुए उन्हीं के जैसे ये पावन कार्य इस पवित्र यात्रा के माध्यम से कर रहे हैं इस यात्रा के द्वारा जिज्ञासुओं को क्या लाभ प्राप्त हुआ इस बात को जानने समझने के लिए इस भजन का अवलोकन करना चाहिए जो श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पृष्ठ क्रमांक ५८३ में शोभायमान है

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश विवाह आदि शुभ अवसरों पर मांस और शराब का प्रयोग करना महापाप है।

राग भैरवी भजनु ।।८ ।।
जोगी जड़ लाए व्या, सुतल जगाए व्या।
जनम जनम सन्दा पाप जलाए व्या ।।टेक ।।
जीव संदी जलि जलि, मेटे विया मल कल।
आतम जो देई बलु, भाल भलाए व्या ।।१ ।।
सुर नर धीर मुनी, ज्ञानी गंभीर गुनी।
राम नाम लाइ धुनी, मौज मचाए व्या ।।२ ।।
पारस बादल सर, सम से चंदनतर।
वचन सुणाए वर,भरम भुलाए व्या ।।३।।
भजन भण्डारी भारी, ब्रह्म विचारी सारी।
अवतारी गुणकारी, मरिज मिटाए व्या ।।४।।
दीननि दयाल पाल, गोबिन्द गोपाल लाल।
टेऊँ कटे काल जाल, स्वरूप लखाए व्या ।।५ ।।

इस भजन के अनुरूप ही जिज्ञासुओं को भरपूर लाभ प्राप्त हुआ। इस यात्रा के द्वारा सद्गुरु महाराज ने जिज्ञासुओं को विभिन्न भजन गाकर सुनाकर सदुपदेश देकर अज्ञान के कारण जड़ता में फंसे एवं गफलत की नींद में सोए जीवों को जागने के लिए प्रेरित किया। उनके अज्ञान को मिटाने जड़ एवं चेतन का ज्ञान प्रदान करने हेतु प्रवचन दिए एवं समझाया गया कि ईश्वर न्यायकारी है उसके यहां पक्षपात नहीं होता कर्मों का लेखा जोखा उसके यहां भरना ही पड़ता है पाप कर्म का फल दुःख एवं पुण्य कर्म का फल सुख होता है इसलिए पाप कर्मों से बचने की शिक्षा दी। जीव में व्याप्त ईर्ष्या द्वेष के कारण जलन एवं तीनों तापों के तेज की जलन को मिटाने एवं बुरे कर्मों को कर करके एवं बुरे विचारों से मैले हो चुके मन को उज्जवलता प्रदान करने हेतु मन को शुभ विचारों से भरने हेतु प्रयास करने पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी एवं सद्गुरु महाराज द्वारा अपनी आत्म शक्ति को पहचानने का सरल मार्ग बताकर जिज्ञासुओं के भाग्य को संवारने का अनोखा प्रयास किया। यात्रा में शामिल सन्त मण्डली जो सुर नर मुनि जन ज्ञानी गुणी एवं गंभीर है सभी ने राम नाम की धुनी एवं गुरुजनों के गुणगान के विभिन्न भजनों की बौछार कर मौज मचाई सन्त बादल के जैसे प्रवचनों की बरखा करते हैं वे चन्दन के समान शीतल हैं उनके वचनों से मन में शीतलता का अनुभव होता है वे पारस के जैसे ही अपने जैसे सभी को बनाने वाले होते हैं,साथ ही उनके तीखे वचनों के बाणों से मन के भीतर व्याप्त भ्रम एवं बेकार के विचारों का नाश होता है, ये सन्त ब्रह्म के विचारों से भरे होते हैं ईश्वर के ही अंश होते है उनके वचन गुणकारी होते हैं जो जीवों के शरीर के

मर्ज एवं मन के मर्ज एवं लोगों के कर्ज मिटाने में सक्षम होते हैं सन्तगण दीन दयाल हैं वे गोविन्द गोपाल हैं वे काल के जाल को काट कर आत्म साक्षात्कार कराते हैं

सदगुरु महाराज की इस यात्रा की यह विशेषता रही कि प्रेम प्रकाश मण्डल के द्वितीय पीठाधीश्वर तपोमूर्ति सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज का १२६ वाँ अवतरण दिवस छत्तीसगढ़ के सभी स्थलों पर जहां जहां सत्संग के ज्ञान रूपी गंगा का प्रवाह हो रहा था सभी स्थलों पर सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज के जन्मोत्सव के मौके के लिए स्वरचित भजन खुशी अजु छाई आ वरी वाधाई आ, आयो आ सुन्दर श्याम सच्चो स्वामी सर्वानंद सुखधाम गाकर खुशियां बांटते हुए मनाया गया यह जन्मोत्सव वैसे तो प्रतिवर्ष सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज के प्रिय गंगा किनारे पर देवभूमि हरिद्वार में निर्मित श्री प्रेम प्रकाश आश्रम पर मनाया जाता है इस वर्ष वहां आश्रम का पुर्ननिर्माण होने के कारण यह जन्मोत्सव पूरे देश में पूरे वर्ष भर मनाया जाएगा। छत्तीसगढ़ इस मामले में भाग्यशाली रहा क्योंकि जन्मोत्सव प्रतिवर्ष जिस समय मनाया जाता है वे भाग्यशाली तिथियां सद्गुरु महाराज के छत्तीसगढ़ यात्रा के दौरान पड़ीं जिससे जन्मोत्सव मनाने का सौभाग्य छत्तीसगढ़ के शहरों को प्राप्त हुआ एवं इसी यात्रा के दौरान बिलासपुर में नवनिर्मित श्री प्रेम प्रकाश आश्रम का उद्घाटन एवं मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम भी २ अक्टूबर को गुरु महाराज एवं संत मण्डली के द्वारा हुआ।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जब आप अज्ञान की नींद से जागेंगे तो यह सारा जगत स्वप्न की तरह हो जायेगा।

परम श्रद्धेय, तपोमूर्ति, महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 129वां जन्मोत्सव प्रेम, भक्ति, उत्साह के साथ मनाया गया

जयपुर । अनन्त श्री सम्पन्न तपोमूर्ति, दीनदयालु से मिलाने वाले समर्थ सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का १२९वां जन्मोत्सव दिनांक ०१ अक्टूबर बुधवार से ०५ अक्टूबर रविवार २०२५ तक श्री अमरापुर स्थान जयपुर सहित देश-दुनिया के सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर बड़े ही उत्साह-उमंग के साथ मनाया गया । प्रतिवर्ष गंगा मैया के तट पर हरिद्वार में मनाया जाने वाला जन्मोत्सव मेला इस वर्ष श्री प्रेम प्रकाश आश्रम हरिद्वार के नवनिर्माण के कारण हरिद्वार में मुख्य मेले का आयोजन ना कर सभी शहरों में अपने-अपने स्तर पर धूम-धाम से मेले का आयोजन किया गया । इसी के साथ श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान जयपुर में प्रेम प्रकाश मंडलाचार्य आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के परम शिष्य (द्वितीय पाद्शाही) महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज के १२९ वे पंच दिवसीय जन्मोत्सव का आयोजन धूम धाम से हुआ । इस अवसर पर पंचदिवसीय श्रीमद् भागवत गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब के पाठ रखे गये ।

पंच दिवसीय जन्मोत्सव के द्वितीय दिन ३०१ नन्हीं-नन्हीं कन्याओं का विधिवत पूजन कर भोजन प्रसादी खिला विभिन्न प्रकार के उपहार भेंट दिए गए । जन्मोत्सव के शुभ अवसर पे कन्या भोज का आयोजन किया गया। सायं ४ से ६ बजे तक भाव प्रवाह संकीर्तन मंडल द्वारा हरिनाम संकीर्तन की मधुर बहार बही।

इससे पूर्व बुधवार को सरस निकुंज सरस प्रभात मण्डल द्वारा भी भजन संकीर्तन का भक्ति भाव की सरिता रस बरसाईं गई !

जन्मोत्सव के दिन प्रातः काल की पावन वेला में नित्य नियम प्रार्थना के पश्चात संत महात्माओं के द्वारा प्रवचन भजन सत्संग संकीर्तन के पश्चात पंच दिवसीय जन्मोत्सव के उपलक्ष में रखे गए ग्रंथ गीता के पाठों का भोग परायण हुआ। संत महात्माओं द्वारा गुरुदेव के विग्रह के समक्ष १२९ दीप प्रज्वलन कर महाप्रसादी का भोग लगा मंगल बधाई गीत गाए गए। इस आनंदोत्सव के उपलक्ष में विशाल भंडारा का आयोजन भी किया गया जिस में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने गुरु का प्रसाद चखा। जन्मोत्सव के समापन के अवसर पर सेवा कार्य के तहत रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया जिस में ५१ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। समाधि स्थल एवं श्री मंदिर को सुंदर ऋतु पुष्पों से शृंगारित कर परिसर में आकर्षण रंगोली बनाई गई। जन्मोत्सव के शुभ मंगल दिवस पे श्री अमरापुर स्थान पर दीपावली पर्व की तरह सुंदर लाइट की सजावट भी की गई। संतो ने बताया कि पंच दिवसीय जन्मोत्सव पर सेवा भक्ति के गौशाला में गौ सेवा, बांगड़ अस्पताल में फल, बटुक ब्राह्मण भोज, विशाल कन्या भोज, संकीर्तन मंडली द्वारा भजन संकीर्तन.आदि अनेक सेवा कार्य एवं धार्मिक अनुष्ठान किया गया !!! इसी तरह पंच दिवसीय सदगुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज जन्मोत्सव भक्ति भाव के साथ संपन्न हुआ !

इसी प्रकार देश विदेश के सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज के १२९वें जन्मोत्सव की धूम रही । श्री गुरुदेव भगवान की छत्तीसगढ़ यात्रा के दौरान भी सभी शहरों में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का १२९वां जन्मोत्सव मनाया गया ।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

भूखों को अपनी पसंद का खाना खिलाएँ,
नंगो को अपनी पसंद के वस्त्र दें। दान में बेकार वस्तुएँ मत दें।

प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर का वार्षिकोत्सव आनन्दपूर्वक सम्पन्न

ब्यावर। नन्दनगर स्थित श्री प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिकोत्सव परम पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता एवं सन्त मण्डली की उपस्थिति में सोमवार १५ सितम्बर से शुक्रवार १६ सितम्बर २०२५ तक बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूम-धाम से मनाया गया। संत श्री शम्भूलाल जी के नेतृत्व में विभिन्न समितियों का गठन कर उन्हें सेवा की जिम्मेदारियां सौंपी गयी। आश्रम में नित नेम प्रार्थना एवं पंच दिवसीय श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद्भगवद् गीता के पाठों के प्रारम्भ के साथ वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ हुआ। बुधवार १७ सितम्बर को श्री अमरापुर स्थान जयपुर से श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष हाजरां हजूर सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का सन्त मण्डली सहित पधारने पर प्रेम प्रकाश नवयुवक मण्डल, प्रेम प्रकाश महिला मंडल, प्रेम प्रकाश बालिका मंडल के साथ-साथ सिंधी समाज के वरिष्ठजनों द्वारा महाराज श्री का भव्य स्वागत-अभिनन्दन किया गया।

सायंकालीन सत्संग सभा के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। परम पूज्य महाराजश्री ने हवन यज्ञ व आरती के साथ ध्वजारोहण कर वार्षिकोत्सव की विधिवत् शुरूआत की। प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल सत्संग सभाओं का आयोजन किया गया। अंतिम दिवस पंचदिवसीय श्रीमद्भगवद् गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों के भोग के पश्चात् विशाल आम भण्डारें का आयोजन हुआ।

अंतिम दिवस सायंकालीन सत्संग के अंत में रात्रि ८ बजे

पल्लव पाकर मेले को पूज्य गुरुदेव भगवान द्वारा पूर्णता दी गयी। इस मौके पर गुरुदेव भगवान ने अपने पावन मुखारविन्द से अमृत वचनों की वरखा करते हुए कहा कि सुख और दुख साथ ही होते है और यह प्रारब्ध में मिश्रित फल दिए है। मनुष्य को इसलिए कभी भी घबराना नहीं चाहिए कि दुख आ गये है। जीवन में परमात्मा से अपने लिए सुमति और सद्बुद्धि मांगे और ईश्वर से मिलने के लिए प्रार्थना जरूरी है। चिता जलाये एक बार ही पर चिंता रोज जलाती है। सत्संग के समापन पश्चात् पूज्य महाराजश्री द्वारा पल्लव पाकर मेले का समापन किया एवं वार्षिकोत्सव के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने की सभी प्रेमियों को बधाई देकर सद्गुरु टेऊँराम मंगलगान का जब गायन किया तब सभी भक्तगण झूम उठे। प्रातःकालीन कार्यक्रम का आयोजन आश्रम पर किया गया एवं सायंकालीन कार्यक्रम होटल राजमहल में आयोजित किये गये।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

सात्विक, राजस और तामस तीन प्रकार की इच्छाएँ मन में उत्पन्न होती हैं। इन तीनों का त्याग करना है। इनमें से कोई भी इच्छा मन में रह गई तब तक शान्ति प्राप्त होने वाली नहीं।

आखिर वह क्या है ?

आज समाज में एक विचित्र आपाधापी का वातावरण बन गया है. किसी के रुपये मार लेना, सौदा करके मुकर जाना आम बात हो गयी है. इस तरह की धूर्तता को सयानापन समझा जाता है. चोरी से हो चाहे बेईमानी से, धन आना चाहिये.

मुम्बई में कान्तिभाई नामक जवाहरात का एक दलाल था. बहुत ही नेक और परिश्रमी. वह स्वयं धनी नहीं था, किंतु व्यापारियों का उस पर पूरा विश्वास था, इसलिये वे बहुत रुपयों का माल उसे सौंप देते थे.

एक बार एक सेठ के यहाँ हीरों की बड़ी खरीदारी निकली. कान्तिभाई ने भी पसन्द करने के लिये एक पुड़िया उनको दी. भूल से उसके साथ एक पुड़िया और चली गयी, जिसमें बहुत अधिक कीमती नीले हीरे थे. दूसरे दिन रात में जब वह हिसाब मिलाने बैठा, तब उसे वह पुड़िया याद आयी और वह दौड़ा हुआ सेठ के घर गया. सेठ ने अलमारी से उसकी पुड़िया निकालकर दिखा दी और कहा कि इसके साथ और कुछ नहीं मिला था. कान्तिभाई बड़ा दुःखी और चिन्तित होकर हीरों के मालिक के पास पहुँचा और सारी बात उन्हें बतायी. जौहरी कान्तिभाई की ईमानदारी से परिचित था. ढाढ़स बँधाते हुए बोला, 'घबराओ मत! कहीं रखकर भूल गये होंगे; मिल जायेगी.' आठ-दस दिन बीत गये और हीरों का कोई पता नहीं चला. वह फिर जौहरी के पास गया और बोला- 'उन हीरों का पूरा मूल्य इतना अधिक है कि चुकाना मेरे बस का नहीं. आपकी बड़ी कृपा होगी यदि केवल लागत दाम मुझसे ले लें. अपना सब कुछ बेचकर भी आपका रुपया चुका दूँगा.'

दूसरे दिन वह फिर सेठ के यहाँ गया और पैर पकड़कर रोता हुआ कहने लगा- 'मेरे बाल-बच्चे बर्बाद हो जाएँगे. अब कौन मेरा विश्वास करेगा? कौन मुझे जवाहरात सौंपेगा? मेरा तो धन्धा ही चौपट हो जायगा. एक बार फिर देख लीजिये, मुझे लगता है, आप हीरे कहीं रखकर भूल गये हैं. ' उस दिन सेठ ने आँखें लाल-पीली करके उसे धक्के मारकर बाहर निकलवा दिया. इससे कान्तिभाई को इतना सदमा पहुँचा कि वह विक्षिप्त-सा हो गया. रात में उठकर बैठ जाता और रोने लगता. घरवालों के समझाने पर वह एक अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ उस सेठ के पास गया और उनके समझाने-बुझाने पर दोनों ने एक पंच मान लिया.

पंच के समक्ष कान्तिभाई ने अपना पक्ष इस प्रकार रखा-- 'उस दिन मैं और कहीं गया नहीं, इसलिये वह दूसरी पुड़िया भी मेरी पहली पुड़िया के साथ इन्हीं के यहाँ भूल से आयी है. प्रमाण अथवा गवाह मेरे पास कुछ भी नहीं है. क्योंकि मैंने इनको पुड़िया अकेले में दी थी. अपनी जानकारी में भी मैंने यह पुड़िया इनको नहीं दी.' उधर सेठ ने अपने जवान लड़के के सिर पर हाथ रखकर सौगन्ध खायी कि 'मेरे पास इसकी कोई दूसरी पुड़िया नहीं आयी.' फैसला कान्तिभाई के विरुद्ध हो गया. अचानक वह सेठ के पैरों में गिर पड़ा और कहने लगा, 'यह आपने क्या किया? हीरे आपके पास हैं; मैं जानता हूँ, किंतु क्यों आपने इकलौते जवान बेटे के सिर पर हाथ रखकर इतनी बड़ी सौगन्ध खायी? भगवान् का दिया सब कुछ आपके पास है. किस बात की कमी है?' रोता-बिलखता वह अपने घर चला गया.

संयोग से तीन-चार दिनों बाद ही सेठ के लड़के को गर्दनतोड़ बुखार (मेनिन्जाइटिस) हो गया और वह दूसरे दिन ही चल बसा. सेठ का घर शोक में डूब गया, किंतु कान्तिभाई को भी कम दुःख नहीं था. वह सोचता- 'मेरे कारण ही यह संयोग बना.'

दो-तीन दिन बाद सेठ हीरे की वही पुड़िया लेकर कान्तिभाई के पास आया और गले लगकर बिलखने लगा, 'भाई, मेरे मन में लालच आ गया और बेटा ले गया. भगवान् के यहाँ देर है, अन्धेर नहीं. मेरी पत्नी कहती है- मेरे पापाचार ने बेटे के प्राण ले लिये.'

मन बड़ा उदास हो जाता है. सोचता हूँ, आखिर वह क्या है, जो आदमी को बेईमान बनने को बाध्य कर देता है और वह पाप कर बैठता है? किस अभाव से प्रेरित होकर सेठ ने ऐसा काम किया! अपार धन था, विवेक भी था उसके पास. सोच-समझकर ही हीरे रखे थे. कोई प्रमाण तो है

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश साक्षी चेतन परमात्मा सब में एक ही है। इसलिए किसी का भी बुरा नहीं सोचना चाहिए। बल्कि जो आप की बुराई सोचे या करे, उसके साथ भी भलाई ही करनी चाहिए।

नहीं. क्या कर लेगा? बुद्धिमान् भी था, तभी बड़ा कारोबार चलाता था, पर ऐसी क्या कमी थी उसके पास? क्या चरित्र की? लड़का चला गया, हीरे रह गये. हीरे रख लेने वाला सेठ भी चला जायगा, हीरे रह जायेंगे. हीरे संग नहीं जाते, तृष्णा और लोभ ही संग जाते हैं. इन्हीं से तो अगला वपु बनेगा.

इसके साथ ही ऐसे उदाहरण भी हैं कि लोग भूखे रह जाते हैं, किंतु बेईमान नहीं हो पाते, हो ही नहीं पाते. मैं सोचता हूँ कि वह क्या है, जो किसी को गरीबी के भीषण कष्ट सहकर भी ईमानदार होने को बाध्य कर देता है? कैसी भी मुसीबत आ पड़े, ऐसा व्यक्ति चाहकर भी बेईमान नहीं हो सकेगा. उसका जमीर उसको शान्त नहीं बैठने देगा. हाँ, याद आया, यह जमीर ही तो है या विवेक. कहीं यह इस कदर भ्रष्ट हो गया है कि अरबों-खरबों की सम्पत्ति होते हुए भी लाखों के हीरों के लिये भटक जाता है. कहीं यह इतना बुलंद है कि एक आना वापस करने के लिये बूढ़ा बाप दूसरे शहर से कितना ही खर्च करके, कष्ट सहकर आता है, कर्ज चुकाने--

काफी पुरानी बात है. सन् १९५० ई. के लगभग. प्रातःकाल का समय था. बच्चे स्कूल चले गये थे और पति महोदय ऑफिस. घर में अकेली होने के कारण सरला बहन दरवाजे पर आ बैठीं. सामने फैली हरी-भरी प्रकृति का आनन्द ले रही थीं कि आवाज सुनायी दी- 'दरी लो, दरी.' एक तरुण व्यक्ति पीठ पर गट्ठर बाँधे दरियाँ बेच रहा था. पास आकर उसने अपना गट्ठर खोला और कई दरियाँ सामने फैला दीं. एक दरी उन्हें पसन्द आ गयी तो युवक से मोलभाव करने लगीं, परंतु उसे चौदह रुपये पंद्रह आने बताये थे और उसी पर अड़ा रहा, जरा भी टस-से- मस नहीं हुआ, 'न मैं पहले ज्यादा दाम बताता हूँ, न पीछे कम करता हूँ. क्यों मैं आपका और अपना समय बर्बाद करूँ?' सरला बहन ने देखा कि लड़के की बात में सच्चाई थी, सो उन्होंने कहा- सो पन्द्रह रुपये दे दिये. चूँकि एक आना उनके पास नहीं था, सो उन्होंने कहा- 'फिर कभी दे जाना.' और लड़का चला गया.

काफी समय बीत गया. सरला जी एक आने की बात बिल्कुल भूल गयीं. अचानक एक दिन देखा एक बूढ़ा आदमी उनके मकान के आसपास चक्कर काट रहा था. उत्सुकतावश उन्होंने आगे बढ़कर पूछा कि वह क्या ढूँढ़ रहा है? वृद्ध ने बड़े दुःखी स्वर में कहा- 'मेरा बेटा कुछ दिन पहले इस शहर में दरी बेचने आया था. वापस लौटने पर वह बीमार पड़ा और ईश्वर का प्यारा हो गया. मरने से कुछ घण्टे पहले उसने आपके मकान का पता बताते हुए कहा कि उसके ऊपर एक आने का कर्ज बाकी है, वह मैं जरूर चुका दूँ. खुले पैसे नहीं होने के कारण उस दिन वह आपका एक आना नहीं चुका सका था. आपका कर्ज तो लौटाना ही था और यह उसकी अन्तिम इच्छा भी थी, इसलिये मैं आया हूँ.' कहते-कहते वृद्ध की आँखों में आँसू छलक आये. वह बोला- मेरे बेटे के अन्तिम शब्द थे- 'बाबा! जीवन भर मैंने ईमानदारी से रोजी कमाई है, मौत के बाद कोई यह न कह दे कि मैंने किसी का पैसा रख लिया.' सरला बहन ने वृद्ध को सान्त्वना दी, जलपान कराया और विदा किया.

आखिर वह क्या है, जो जमीर को, विवेक को, आत्मा को संस्कारित करता है. एक अरबपति का विवेक भटक सकता है, पर एक गरीब दरीवाले का जमीर नहीं डिग सकता. उसे एक क्या दस पुड़िया हीरों की दे दी जायँ तो भी मन नहीं डोलेगा. यह बात केवल रुपयों पर नहीं, जीवन के हर क्षेत्र में लागू होती है-

अमेरिका में एक वकील ने बहुत ही सस्ते दामों में एक जमीन खरीदी. विक्रेता एक किसान था. रजिस्ट्री भी हो गयी. दो दिनों के बाद किसान वकील के पास आया और बोला, 'मेरी पत्नी कहती है- इन दामों में यह जमीन हमें नहीं बेचनी चाहिये. अतः आप जमीन के कागजात मुझे वापस कर दीजिये.' वकील सच्चा आदमी था, किंतु मुस्कराते हुए उसने कहा- 'इतनी सस्ती जमीन यदि मैं वापस नहीं दूँ तो?' किसान ने कहा, 'सीधी-सी बात, मैंने आपकी कोई हानि नहीं की है, फिर आप मेरा नुकसान क्यों करेंगे?' वकील ने जमीन वापस कर दी. वकील की आचार-संहिता में यह व्यवहार सदाचार के अन्तर्गत आता था.

तो क्या सदाचार जमीर अर्थात् अन्तरात्मा को प्रभावित करता है? क्या सदाचार चरित्र का ही अंग नहीं? सच्चरित्र व्यक्ति का आचार सत् तो होगा ही. चरित्र जितना ऊँचा होगा, लोभ के सामने वह उतना ही तनकर खड़ा हो सकेगा.

संकलित : कल्याण गीता प्रेस

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश काल की गति बहुत धीमी है, पर उसका शब्द इतना बड़ा भारी है, जो बहुत दूर-दूर तक सुनने में आता है। इतना होने पर भी सब लोग उसको सुन नहीं सकते हैं।

तेरा कैसे करूँ आभार, ऐ मेरे सत्गुरू जी

मेरी सोच से बढ़कर मुझको, दिया गुरु ने प्यार,
कैसे, आभार करूँ.....?
नाम का जाम पिलाया मुझको, किया बड़ा उपकार,
कैसे, आभार करूँ.....?

मन में मेरे चाह थी सत्गुरु, दर पर तेरे आने की,
एक ही आस थी मुझको सत्गुरू, दर्शन तेरा पाने की,
कृपा करके बक्शा तुमने, अमरापुर दरबार,
कैसे, आभार करूँ.....?
मेरी सोच से बढ़कर मुझको, दिया गुरू ने प्यार,
कैसे, आभार करूँ.....?

मन में मेरे चाह थी सत्गुरू, जुड़ जाऐ तुमसे नाता,
तुम ही हो, इस दिल के प्यारे, बस तुम ही मेरे दाता,
शरण लगाकर, मीत बनाकर, लुटाया अपना प्यार,
कैसे, आभार करूँ.....?
मेरी सोच से बढ़कर मुझको, दिया गुरू ने प्यार,
कैसे, आभार करूँ.....?

मन में मेरे चाह थी सत्गुरू, इस मन को आराम मिले,
हर में हरी निहारने वाला, मुझको टेऊँराम मिले,
पूर्ण सत्गुरू पाया जाऊँ, तुम पर मैं बलिहार,
कैसे, आभार करूँ.....?
मेरी सोच से बढ़कर मुझको, दिया गुरू ने प्यार,
कैसे, आभार करूँ.....?

मन में मेरे चाह थी सत्गुरू, अपना मुझे बना लेना,
'वधवा' के सिर हाथ ये रखना, भव से पार लगा देना,
तुम ही हो बस मालिक मेरे, सत्गुरू तुम दातार,
कैसे, आभार करूँ.....?
मेरी सोच से बढ़कर मुझको, दिया गुरू ने प्यार,
कैसे, आभार करूँ.....?
नाम का जाम पिलाया मुझको, किया बड़ा उपकार,
कैसे, आभार करूँ.....?

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा,
समालखा मण्डी (हरियाणा)

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

प्रभु को प्रेम व श्रद्धा से याद करें तो वे निश्चय ही आपकी देखरेख करेंगे, आपकी सुरक्षा करेंगे।

अमरापुर गमन

श्री श्रीचंद कोसिजा

दिल्ली। श्री श्रीचंद कोसिजा ६७ वर्ष की आयु में अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर दिनांक १६ अगस्त २०२५ को इस नश्वर देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारे । आप गदाईपुर दिल्ली स्थित श्री प्रेम प्रकाश मंदिर के प्रमुख सेवाधारी थे ।

श्री किशनचन्द झमटानी

जयपुर। श्री किशनचन्द झमटानी दिनांक २३ सितम्बर २०२५ को परम पूज्य आचार्य श्री के गुरुचरणारविंद में श्री अमरापुर धाम सिधारे ।

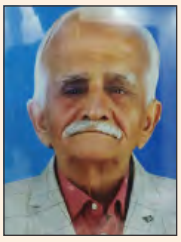

श्री विष्णुकुमार नाथानी

कानपुर। श्री विष्णुकुमार नाथानी ७६ वर्ष की आयु में इस सांसारिक देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारे।

श्रीमती कंचन कुरुस्वानी

ग्वालियर। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर के प्रमुख सेवाधारी एवं अमरापुर नवयुवक मण्डल के सदस्य श्री संजू कुरुस्वानी की धर्मपत्नि श्रीमती कंचन कुरुस्वानी अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर दिनांक ०६ अक्टूबर २०२५ को इस संसार का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारी ।

श्री विष्णुदास खटवानी

चित्तोड़गढ़। धीर-गम्भीर माननीय श्री विष्णुदास खटवानी जी दिनांक ११ अगस्त २०२५ को ७५ वर्ष की आयु पूर्ण कर श्री अमरापुर धाम सिधारे । आप प्रेम प्रकाश आश्रम चित्तोड़गढ़ की सेवा में सेवारत रहे । आपके अंतिम यात्रा में पूज्य संत रामप्रकाश जी (अजमेर) द्वारा पूज्य गुरुजनों की ओर से सम्मिलित होकर पूज्य गुरुजनों की पाखर ओड़ाई गयी साथ ही परम पूज्य महाराजश्री जी द्वारा दूरभाष पर आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दिव्य श्रीचरणों में प्रार्थना की गयी ।

श्री मोहनदास हासानी

किशनगढ़। सौम्य व मृदुभाषी श्री मोहनदास हासानी जी पुत्र स्व. श्री लधाराम हासानी जी दिनांक १५ सितम्बर २०२५ को श्री अमरापुर धाम सिधारे ।आपकी अंतिम यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व परम पूज्य गुरुजनों की ओर से पूज्य संत रामप्रकाश जी (अजमेर) ने पाखर ओढ़ाकर पूज्य गुरुजनों के पावन श्रीचरणों में प्रार्थना की । दिनांक १७ सितम्बर २०२५ को प्रेम प्रकाश मण्डल के पंचम पीठाधीश्वर परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने आपके निवास पर पहुंचकर परिवारजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना प्रकट की साथ ही आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दिव्य श्रीचरणों में शोक संतप्त परिवार को धैर्य और साहस प्रदान करने की प्रार्थना की ।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

सन्त की कृपा एवं पूर्ण गुरु की दया दृष्टि जब तक नहीं होती तब तक परमार्थ की बातें सहज समझ में आने वाली नहीं।

श्रीमती मीरा मंधानी

भाटापार। उदार हृदया, शांतिप्रिय माता मीरा मंधानी पत्नि स्व. श्री पूरनलाल मंधानी जी दिनांक १४ अगस्त २०२५ को ८७ वर्ष की आयु पूर्ण कर आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अभय श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी । आप भक्तिमति, सेवामूर्ति पूज्या माता समुझबाई जी के सानिध्य में रहकर जीवन पर्यन्त दास्य एवं सम्पूर्ण भक्तिभाव से आश्रम की सेवा में संलग्न रही ।

श्रीमती कविता पुरसानी

जयपुर। श्रीमती कविता पुरसानी (नानकीदेवी) धर्मपत्नि श्री अशोक कुमार पुरसानी दिनांक ०४ अक्टूबर २०२५ को आचार्य श्री के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

व्रत–पर्व–उत्सव

17 अक्टूबर 2025–शुक्रवार– एकादशी
18 अक्टूबर 2025–शनिवार– धनतेरस
20/21 अक्टूबर 2025– सोम–मंगल– अमावस्या, दीपावली
22 अक्टूबर 2025– बुधवार– गोवर्धन पूजा, अन्नकूट महोत्सव
23 अक्टूबर 2025– गुरुवार– चन्द्र दर्शन, भाईदूज, कार्तिकोत्सव प्रारंभ
27 अक्टूबर 2025– सोमवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
30 अक्टूबर 2025– गुरुवार–गोपष्टमी
31 अक्टूबर 2025– शुक्रवार–आंवला नवमी
02 नवम्बर 2025–रविवार– देवउठनी एकादशी,
02 नवम्बर 2025–रविवार– तुलसी विवाह
05 नवम्बर 2025–बुधवार– कार्तिक पूर्णिमा,
05 नवम्बर 2025–बुधवार– गुरुनानक जयंती
08 नवम्बर 2025–शनिवार– गणेश चर्तुर्थी
15 नवम्बर 2025–शनिवार– एकादशी
20 नवम्बर 2025– गुरुवार– अमावस्या
22 नवम्बर 2025– शनिवार– चन्द्र दर्शन
26 नवम्बर 2025– बुधवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश अगर भगवान ने आपको कुछ दिया है तो उस दिये हुए धन में से गरीबों, अनाथों, विधवाओं और मुसाफिरों की सेवा और सहायता करो।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर
सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज
का यात्रा कार्यक्रम अक्टूबर 2025 से जनवरी 2026 तक

23 अक्टूबर 2025	यात्रा
24 से 26 अक्टूबर 2025	पूना
27 से 28 अक्टूबर 2025	हरिद्वार
29 अक्टूबर 2025	यात्रा
30 अक्टूबर 2025	जयपुर (गोपष्टमी महोत्सव)
31 अक्टूबर से 01 नवम्बर 2025	सीकर
02 से 05 नवम्बर 2025	कोटा
06 नवम्बर 2025	यात्रा
07 नवम्बर 2025	राजकोट
08 से 09 नवम्बर 2025	भावनगर
10 से 11 नवम्बर 2025	जामनगर
12 से 13 नवम्बर 2025	गांधीधाम
14 नवम्बर 2025	यात्रा
15 से 17 नवम्बर 2025	दिल्ली
18 से 19 नवम्बर 2025	गया (पिंडदान)
20 से 22 नवम्बर 2025	काशी
23 से 25 नवम्बर 2025	प्रयागराज
26 नवम्बर 2025	अयोध्या
27 से 28 नवम्बर 2025	लखनऊ
29 से 30 नवम्बर 2025	जयपुर
01 दिसम्बर 2025	अजमेर (प्रातःकाल गीता जयंती उत्सव)
01 दिसम्बर 2025	भीलवाड़ा (सायंकाल सत्संग)
02 से 03 दिसम्बर 2025	नसीराबाद, केकड़ी
04 से 06 दिसम्बर 2025	अहमदाबाद
07 से 09 दिसम्बर 2025	सूरत
10 से 31 दिसम्बर 2025	अनिर्णीत
01 से 03 जनवरी 2026	मुम्बई
04 से 05 जनवरी 2026	लोनावाला
06 से 07 जनवरी 2026	पिम्परी
08 जनवरी 2026	यात्रा
09 से 13 जनवरी 2026	मनीला (विदेश यात्रा)
14 जनवरी 2026	यात्रा
15 से 16 जनवरी 2026	चैन्नई
17 से 19 जनवरी 2026	श्री रामेश्वरम धाम

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य से मोहित मनुष्य कल्याण पथ से भ्रष्ट हो जाता है।

डाक पंजीकृत संख्या ग्वालियर/40020293/2020-22
रजि० समाचार पत्र-रजि० नं० MP/Hindi/2008/25627

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं सितम्बर २०२५ अंक खां अगिते-

।। दशपदी - 18 ।।

भूल न देखे किसका दोषा, झूठ कहे ना करहैं रोषा।
श्रवण से न सुने पर निन्दा, मन से पर का चितै न मन्दा।
अहंकृति को बुद्धि से त्यागे, इन्द्रियों से न विषय में लागे।
दुष्ट जनों से अंक न लावे, दुर्वस्तुनि की गन्ध हटावे।
अंग अंग हरि भक्ती भरपूरा, कह टेऊँ सो वैष्णव पूरा।। 8 ।।

वैष्णव जूं विशेषताऊं बुधाईंदे सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजनि चवनि था, "जेको बिए कंहिंजी भुल ऐं ऐब नथो डिसे; जेको कूड़ु नथो गाल्हाए ऐं न ई कंहिंते क्रोधु थो करे; जेको कननि सां कंहिंजी निंदा/गिला कोन थो बुधे; जेको मन सां कंहिंजी बुराई कोन थो डिसे; जेको पंहिंजी बुद्धीअ मां अहंभाव खे कढी थो छडे; जेको पंहिंजियुनि इंद्रियुनि खे विषय-भोग में नथो लगाए; जेको दुष्ट मनुषनि सां सम्बंधु नथो रखे; जेको ख़राब शयुनि जे गंध/बूअ खां किनारो थो करे; जंहिंजे शरीर जे अंग-अंग में हरीअ जी भगिती भरियल आहे-" स्वामी जनि चवनि था, "उहो मनुषु पूरन वैष्णव आहे."

विष्णु भगवान जी उपासना कंदड़ खे 'वैष्णव' चवंदा आहिनि. अर्थात् वैष्णव विष्णूअ जो भक्तु हूंदो आहे. वैष्णव धर्म या भागवत धर्मु बि आहे, जंहिंजो प्रधान उपास्य देवु वासुदेव आहे, जेको ज्ञान, शक्ती, बल, वीर्य, ऐश्वर्य ऐं तेज सां सम्पन्नु हुअण करे 'भगवान' या 'भगवत' चयो वियो आहे. भगवत जे उपासकनि खे 'भागवत' चयो वियो आहे. वैष्णव/भागवत संप्रदाय जो भारतीय संस्कृतीअ जी वीचारधारा में सभिनी खां वडो योगदानु आहे. मानवता जी सिख्या डींदड़ इन महान संप्रदाय जो मुख्य उपास्य देवु विष्णू (वासुदेव) आहे, जेको चल-अचल विश्व खे व्यापे थो छडे, उहो विष्णू आहे. वैष्णव संप्रदाय सगुण भगिती कंदडु आहे. भगवान विष्णूअ जे लोक-कल्याणकारी अवतार-कार्य जनता जे मन खे मोहे छडियो आहे. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ऐं श्रीकृष्ण जे चरित्र मां ऊचो आदर्शु ऐं जीवन-योगु साकार थियो आहे. 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय' इहो वैष्णव भक्तनि जो १२ अखरी मंतरु आहे. इन संप्रदाय जी धारणा आहे त इंद्रियुनि खे भगिती-मार्ग डांहुं मोड़णु घुरिजे. इन्हनि जे भगिती साधना जा दर सभिनी लाइ खुलियल आहिनि, ऊच-नीच जो कोई फ़रकु/भेदु नाहे. भगिती करण जो सभिनी खे अधिकारु आहे. 'गीता' ऐं 'श्रीमद्भागवत' हिन संप्रदाय जा आधारभूत ग्रंथ आहिनि.

संत कवि नरसी मेहता जो ही भजनु मशहूरु आहे-

'वैष्णव जन तो तेणे कहिए, पीर पराई जाणे रे..... (हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।
कार्यालय: प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
सम्पादक : प्रहलाद सबनानी
प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)